चन्दामामा

मां - बच्चों का मासिक पत्र





एक गाँव में एक गृहस्थ रहा करता था। उसकी पत्नी बड़ी चुड़ैल थी। क्योंकि पति जरा नरम स्वभाव का था, इसलिए वह और भी सख्त और कड़वी हो गई थी।

जब शादी हुई तो पति के ही काम किया करता था, जो मर्द आम तौर पर करते हैं। पर जैसे जैसे समय गुजरता गया वैसे वैसे स्त्रियों के काम भी उसकी पत्नी उसे सौंपती गई। खेती के काम में मदद करना तो अलग, वह घर के काम भी उससे करवाने लगी। उसे ही गौवों को देखना पड़ता, बकरियों को खिलाना पिलाना होता। आखिर पानी भी वही लाने लगा। आङ्गन में झाड़ू देना, कपड़े धोना, चूल्हा जलाना, ये सब काम भी उसके मत्थे पड़े।

इतना सब करने पर भी उसकी पत्नी उसे दिन भर जली कटी सुनाती रहती। जो कुछ वह करता और न करता उसमें गलतियाँ पकड़ती। मगर पति को उसकी बातें खड़े होकर सुनने तक फुरसत न थी। जब वह काम पर इधर उधर दौड़ धूप कर रहा होता तो पत्नी एक जगह खड़े होकर, गला फाड़कर चिल्लाती-"तुम्हें एक काम भी नहीं आता जाता। कौन-सा काम पहले करना चाहिये और कौन-सा बाद में, यह भी नहीं जानते। इतने अनाड़ी पति के साथ में भला कैसे गृहस्थी चलाऊँ?" उसकी आवाज मील दूरी पर भी सुनाई पड़ती।

यद्यपि पत्नी उसे इतना सता रही थी तो भी पति कुछ न कहता। वह पत्नी से रार न मोल लेना चाहता था। वह यह जानता था कि सब उसे देखकर हँसते थे।

एक दिन पत्नी ने पति से कहा-"दूध फट गया है। कब कौन-सा काम तुमने ठीक किया है?"

पति ने आश्चर्य से पूछा-"क्या दूध का फट जाना भी मेरी गलती है?"

"अगर तुमने दूध का बर्तन ठीक तरह धोया होता तो दूध क्यों फटता?" पत्नी ने पूछा।

"देखो, मुझे नहीं मालूम था कि दूध के बर्तन भी मुझे धोने थे, अभी तुम बता रही हो।" पति ने पूछा।

"मैं कितने काम देखूँ! जब तुम हो तो क्या तुम्हारी मदद की जरूरत मुझे न होगी?" पत्नी ने पूछा।

"वह सब में नहीं जानता हूँ। मुझे क्या क्या काम करने हैं, उन सब की एक सूची बनाकर मुझे दे। अगर मैं उनको न करूँ तब पूछ तलब करना। यह सिर्फ बातो बातों में तय होनेवाली बात नहीं है।" पति ने कहा।

वह कागज पर लिखने लगा और पत्नी उसके काम बताती गई। सूची बड़ी लम्बी हो गई।



थोड़े दिन गुजर गये। संक्रान्ति आई। कल त्यौहार था कि पत्नी ने घर के पासवाले पोखर में धोबी घाट खोल दिया। पति कपड़े धोकर, निचोड़ कर देता और वह उन्हें सुखा देती। जब तक यह काम जारी रहा वह पति को डाँटती डपटती जाती थी। "कल त्यौहार है, अभी रोज़मर्रे के काम ही नहीं हुये हैं, त्योहार का काम भला क्या होगा? सूची लिख ली, पर क्या फायदा? एक काम भी नहीं होता। तुम जैसा निकम्मा कहाँ नहीं है। माँ ने कहा ही था।"

अभी वह कह ही रही थी कि आफत आ गई। उसने पति के हाथ से कपड़ा लेने के लिये फिसलनदार पत्थर पर पैर रखा। पति को डाँटते डपटते उसका ख्याल न रहा। पैर उस पर पड़ना था कि यह फिसलकर पोखर में गिर गई।

"डूब रही हूँ, मर रही हूँ, मुझे जल्दी बाहर निकालो।" पत्नी ने कहा।

"डूबोगे नहीं, पोखर गहरा नहीं है। तुम्हारे गले तक ही पानी आयेगा।"

"ठण्ड के कारण सारा शरीर जम-सा रहा है। जल्दी मुझे बाहर निकालो।" पत्नी ने ठण्ड से काँपते हुए कहा।

"यह कैसे! सूची में अभी कई ऐसे काम हैं, जो मुझे करने हैं। यह काम सूची में नहीं है।" पति ने कहा।

"मुझे निकालते हो कि नहीं? बाप रे बाप, जोंक।" पत्नी चिल्लाई।

"लगता है, जो हमने आपस में इन्तजाम किया था, वह भूल गई हो, घर जाकर सूची लाऊँगा और तुम्हें सुनाऊँगा।"

पत्नी ठण्ड और जोंकों के भय से काँप रही थी। उसने काँपती हुई आबाज में कहा-"मर रही हूँ। उस सूची को फाड़कर फेंक दो, पहले मुझे बाहर निकालो। तुम्हारा भला होगा।"

"इस तरह कहो। बिस्कुल ठीक। अब इस सूची से हमारा कोई सरोकार नहीं है। अब से तुम स्त्रियों का काम करो और मैं मर्दों का। मानती हो यह?" उसके पति ने पूछा।

पत्नी मान गई।

पति उसको पोखर से निकालकर घर लाया। आग से उसकी सेक की। उसके बाद पत्नी ने पति को कभी बुरा-भला न कहा।





[१७]

[पद्मपाद ने पिङ्गल को वह गुफा दिखाई जहाँ रेगिस्तान के डाकुओं ने व्यापारियों को बाँध दिया था। इसनगौरी अपने सैनिकों को लेकर वहाँ गया और उसने उन्हें छुड़वाया। फिर पिङ्गल के कहने पर पद्मपाद ने अपने जादू के बल से, बबर शेर और भेड़िये बनाये। उनसे डाकुओं को पकड़कर अपने पास बुलाया। उसके बाद]

मौत के डर के मारे काँपते आते रेगिस्तान के डाकुओं को देखकर हसनगौरी ने विजयोल्लास में अट्टहास किया। उसने कभी कल्पना न की थी कि सालों से रेगिस्तान में यात्रियों को लूटकर जीवन निर्वाह करनेवाले ड़ाकू इतनी आसानी से पकड़े जायेंगे। उसने सोचा कि नवाब अवश्य पद्मपाद को ईनाम देगा।

"पद्मपाद, आपकी शक्ति अतुलनीय है। इन दुष्टों को पकड़ने के लिए हम कई वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं। आज आपकी सहायता से हमारा प्रयत्न सफल हुआ है। अब से इस रेगिस्तान में, लोग सुरक्षित यात्रा कर सकेंगे। हम आपकी सहायता के लिए बहुत कृतज्ञ हैं ।" हसनगौरी ने कहा।

पद्मपाद ने मुस्कराते हुए कहा- "हसन! जो कुछ सहायता मैं कर सकता

था, मैंने की। अब इन डाकुओं की सुनवाई कर उनको सजा देना तुम्हारा काम है। मैं अपने बब्बर शेर और भेडियों को वापस बुला रहा हूँ। यह कहकर पद्मपाद ने हाथ ऊपर उठाकर कोई मन्त्र पढ़ा। तुरत बब्बर शेर और भेडिये अदृश्य हो गये। पद्मपाद ने अपनी हथेली में आये हुए पत्थरों को इसनगौरी और पिङ्गल को दिखाकर कहा-"ये है भेडिये और बब्बर शेर।" उसने उन्हें दूर फेंक दिया।

हसनगौरी के हुक्म देते ही उसके सैनिकों ने डाकुओं के सरदार "गिद्ध" को हथकड़ी लगा दी। उसके साथियों को एक रस्सी में बाँध दिया। इस बीच पद्मपाद ने पिङ्गल को अलग ले जाकर कहा- "पिङ्गल! क्या तुम तुरन्त अवन्तीनगर जाने की सोच रहे हो?"

"हाँ, पद्मपाद! मेरे दुष्ट भाई, मुझे जहाज के कप्तान को बेचने के बाद मेरी माँ को तरह तरह से सता रहे होंगे। पहले भी उन्होंने ऐसा ही किया था। उनको जान देनेवाली माँ पर ही प्रेम नहीं है।" पिङ्गल ने कहा।

"इन सब कष्टों का कारण तेरा भल्लूककेतु को बुलाने का मन्त्र भूल जाना ही है।



वह मन्त्र फिर बताता हूँ, उसे याद रखो। भूलना नहीं।" कहकर पद्मपाद ने पिङ्गल को वह मन्त्र फिर बताया। अपने हाथ की छोटी अंगुली की अंगूठी निकालकर उसे देते हुए कहा-"यह लो, इस अंगूठी को सावधानी से रखो। अगर कभी तुम मुझे देखना चाहो तो मन में मेरा ख़याल करके अंगूठी देखना और मैं तुरन्त तुम्हारे पास आ जाऊँगा।"

"पद्मपाद! मैं तुम्हारी सहायता कभी न भूलूँगा। तुम्हारी मदद के कारण ही में फिर अपनी माँ को देख पा रहा हूँ। क्या तुम भी मेरे साथ अवन्तीनगर आ सकोगे? तुम्हें देखकर मेरी माँ खुश होगी।" पिङ्गल ने कहा।

पद्मपाद ने पिङ्गल से कहा-"पिङ्गल! जो तुमने मेरी सहायता की है, मैं उसे कैसे भूल सकता हूँ। तुम्हारी सहायता के कारण ही मैं महामायाबी को जीत पाया था। इसलिए एक दिन तुम्हारे घर अतिथि बनकर जाऊँगा और तुम्हारी माँ के दर्शन भी करूँगा। खैर, अब मुझे इन व्यापारियों को छोड़कर अकेले ही तीर्थों को देखने जाना होगा। अब





जाऊँगा।" उसने कहा ही था कि यह अदृश्य हो गया।

पिङ्गल ने हसनगौरी के पास जाकर कहा कि वह अपने देश वापस जा रहा है। यह सुनते ही हसनगौरी ने आश्चर्यपूर्वक पूछा-"पिङ्गल! यह क्या कह रहे हो? तुम तो इस तरह कह रहे हो, जैसे तुम्हारा घर कहीं आसपास ही हो। तुम्हारा देश, जानते हो, यहाँ से कितने हजार मील दूर है।"

पिङ्गल ने मुस्कराकर कहा-"हसन! तुम मेरी शक्ति के बारे में नहीं जानते। अगर तुम मेरे साथ उस पीपल के पेड़ के नीचे आये तो तुम्हें एक अजीब व्यक्ति दिखाऊँगा। सैनिकों और डाकुओं का उसको देखना अच्छा नहीं।" कहकर वह बड़े पत्थर की आड़ में चला गया। पिङ्गल के मन में मन्त्र जपते ही, भल्लूककेतु उसके सामने प्रत्यक्ष हुआ। "स्वामी! क्या आज्ञा है? आप इस गुलाम को भूल गये थे क्या?" उसने पूछा।

भल्लूककेतु के भयङ्कर आकार को देखते ही हसनगौरी ने जोर से चिल्लाकर वहाँ से भागना चाहा। पिङ्गल ने उसे रोकते हुए कहा-"हसन! तुम न घबराओ। यह भल्लूककेतु मेरा सेवक है।"

"यह राक्षस तुम्हारा सेवक है?" हसनगौरी को और भी आश्चर्य हुआ।

"हाँ" कहता पिङ्गल भल्लूककेतु के कन्धे पर चढ़ बैठा। उसने हसन से कहा-?हसन! अब मैं अपने देश बापस जा रहा हूँ। मुझे मरने से तुमने बचाया। मैं इसके लिए हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।" फिर उसने भल्लूककेतु से कहा-"अब मुझे अवन्तीनगर मेरे घर ले जाओ।"

भल्लूककेतु ने जोर से हुँकार किया। वह आकाश में उड़ चला। समुद्र, नदी, पहाड़ पार करके वह पिङ्गल को सूर्योदय के समय तक अवन्तीनगर के समीप उसके घर के पास ले गया।

घर की हालत ऐसी थी कि उसे देखते ही यह मूर्छित सा हो गया। वह यह भी जान गया कि उसके भाइयों ने माँ को बहुत सताया होगा। वह घर के दरवाजे के पास पहुँचा था कि उसे अपनी दुबली-पतली, कमजोर माता दिखाई दी। उफनते दुःख को रोककर, पिङ्गल भागा-भागा गया और उसने माँ को "माँ" कहकर गले लगा लिया। माँ, कुछ देर तक हैरान रही, फिर अपने लड़के को पहचानकर उसने कहा-"क्यों बेटा, पिङ्गल! जिन्दा हो? कितनी किस्मत वाली हूँ।" वह रोने लगी। पिङ्गल ने माँ को सान्त्वना देते हुए कहा-"माँ, अब हमारे घबराने की कोई जरूरत नहीं। मेरे दुष्ट भाई कहाँ हैं?"

"बेटा, तुझे धोखा दिया था उन्होंने। इसलिए वे उसकी सजा भुगत रहे हैं। उन दोनों को राजा ने कैद में डाल रखा है।" माँ ने कहा।



अगर यह बात है तो क्यों तू इस हालत में है? जो धन और जादुवाली थैली छोड़ गया था, वे हैं न?" पिङ्गल ने पूछा। माँ ने अपने दुःख को जब्त करते हुए कहा-"बेटा! उनके कारण ही राजा ने उन्हें जेल में डाल दिया है।" उसने इसके बाद पिङ्गल के जहाज के कप्तान के गुलाम के रूप में बिकने के बाद, जो कुछ गुजरा था, कह सुनाया।

माँ के सबकुछ सुनाने के बाद पिङ्गल गुस्से से काँपने लगा-"माँ, मैं इस अवन्तीनगर के राजा से बदला लेकर



रहूँगा।" उसने कहा। फिर उसने भल्लूककेतु को बुलाया। "स्वामी! क्या आज्ञा है?" पूछता भल्लूककेतु प्रत्यक्ष हुआ।

"भल्लूक! अवन्तीनगर के सजा ने मेरे दोनों भाइयों को कैद में डाल दिया है। उनको तुरन्त यहाँ लाना है। यही नहीं, उसके खजाने का सारा धन भी लाओ। जादू की थैली भी उसके रास है। उसे भी लाओ।"

"अच्छा, हुजूर।" कहकर भल्लूककेतु अदृश्य हो गया। पाताल में से होता हुआ, वह राजमहल में गया। खजाने का सब धन लेकर, जादू की थैली लेकर वह जेल में गया।

भल्लूककेतु को देखते ही पिङ्गल के भाई, जीवदत्त और लक्षदत्त चिल्लाए, और मूर्छित हो गये। भल्लूककेतु ने उन दोनों को कन्धे पर डाल लिया और पिङ्गल के पास आकर कहा-"स्वामी! यह लीजिये जादू की थैली! इस गट्ठर में, राजा के खजाने का सारा धन है। ये आपके भाई हैं।"

मूर्छित पुत्रों को देखकर माँ का वात्सल्य जाग उठा। वह उनके दिए



हुए कष्ट भूल गई। उसने उनके मुँह पर पानी छिड़ककर "बेटों, बेटों" प्रेम से पुकारा। जीवदत्त और लक्षदत्त ने अखें खोली। जब सामने उन्हें पिङ्गल दिखाई दिया तो उनके प्राण ऊपर के ऊपर रह गये और नीचे के नीचे। उन दोनों में पछताते हुए कहा-"पिङ्गल! हमें क्षमा करो। हमें अक्ल आ गई है। हमने अपने पापों का प्रायश्चित उन काली कोठरियों में कर लिया है।"

यह सुनकर पिङ्गल को भी उनपर दया आई। फिर भी उसने उनको गुस्से की

नज़र से देखकर कहा-"तुम दोनों से बड़ा नीच धोखेबाज इस संसार में कोई न होगा। अगर चाहूँ तो तुम दोनों को अभी भल्लूककेतु द्वारा पाताल में गड़वा सकता हूँ। परन्तु चूँकि बड़े भाई हो, इसलिए इस बार भी छोड़ देता हूँ। अगर तुमने फिर कभी मेरा या माँ का बुरा सोचा तो बोटी बोटी कटवा दूँगा।"

"भाई क्षमा करो। हमें अकल आ गई है।" जीवदत्त और लक्षदत्त ने एक स्वर में कहा।

पिङ्गल ने जादू की थैली माँ को देते हुए कहा-"माँ, तुरन्त भोजन का प्रबन्ध करो।" फिर उसने भल्लूककेतु को बुलाकर कहा "भल्लूक! नदी के किनारे जो पेड़ों का झुरमुट दिखाई दे रहा है, वहाँ रात भर रहो और सबेरे होते ही, मेरे लिए वहाँ एक महल तैयार करो। यह हर दृष्टि से अवन्तीनगर के राजा के महल से अच्छा होना चाहिये। समझे?"

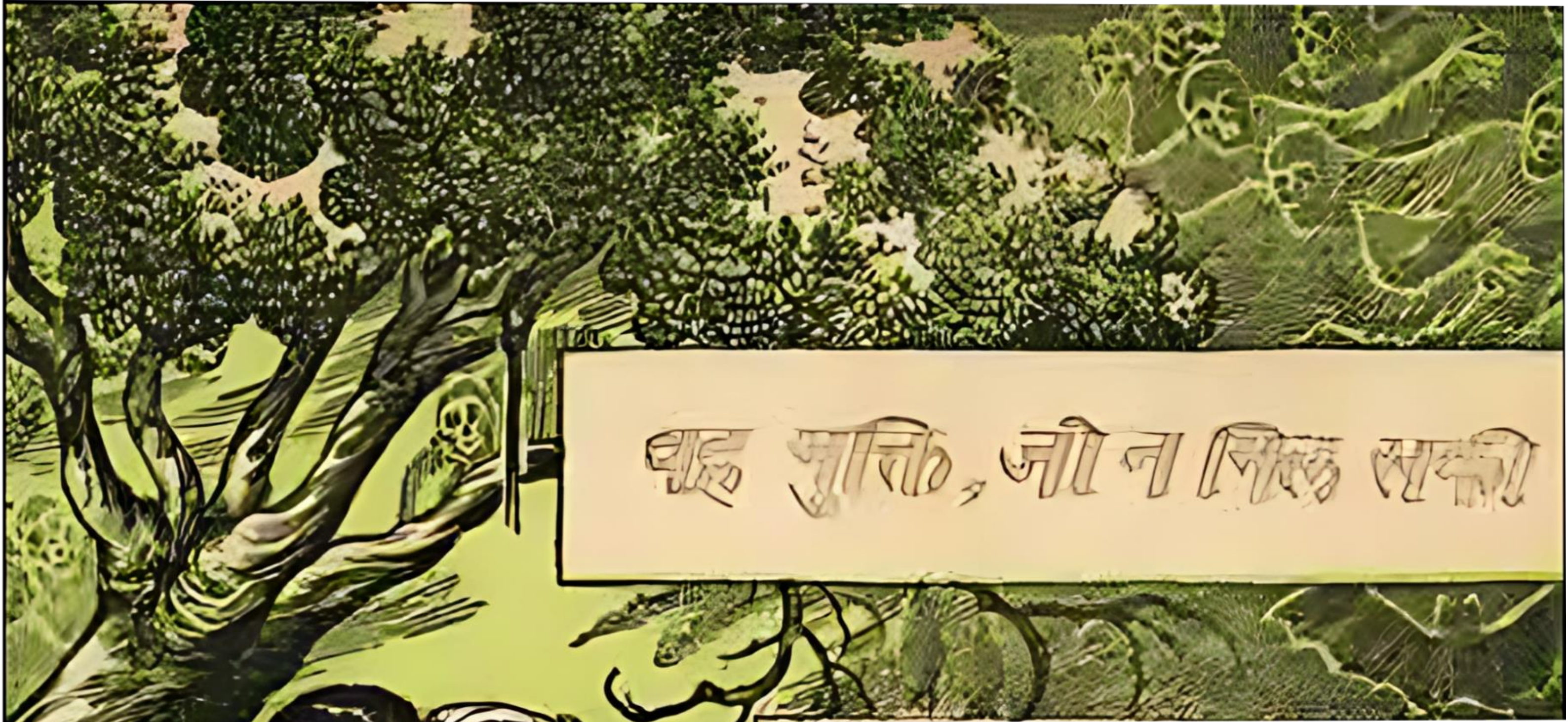
"अच्छा हुजूर, भल्लूक पर्वत पर रहनेवाले मेरे बन्धुबान्धव, नौकर-चाकरों में बड़े-बड़े कारीगर हैं। मैं बुलाऊँ तो वे तुरन्त चले आयेंगे। क्या अभी काम शुरू कर दें?" भल्लूककेतु ने पूछा।

"दिन के समय, तुम राक्षसों का यहाँ आना खतरनाक है। तुम्हें देखने के बाद यहाँ चिड़ियायें भी रहने में घबरायेंगी। लोगों का नगर छोड़कर भाग जाना मुझे पसन्द नहीं है। इसलिए सूर्यास्त के बाद ही अपना काम करो।" पिङ्गल ने कहा।

"अच्छा हुजूर! अभी मैं भल्लूक पर्वत जाता हूँ। मैं जाकर अपने आदमियों को यह बताऊँगा और अन्धेरा होने के बाद काम शुरु हो जायेगा।" भल्लूककेतु यह कहकर अदश्य हो गया।

(अगले अङ्क में समाप्त)





वह मुक्ति, जो न मिल सकी



विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। शव को उतार कर कन्धे पर डाल वह श्मशान की ओर चुपचाप चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा-"राजा, यह सोचना अच्छा है कि जो तुम कर रहे हो वह ठीक है कि नहीं, क्योंकि भले ही कितनी ही लम्बी आयु हो, अच्छे काम करने के लिए समय काफी नहीं होता। उनको तुरन्त कर देना चाहिए। किसी जमाने में रत्नपाल नाम के राजा ने पचास साल राज्य किया और एक भी अच्छा काम न किया। मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" उसने यह कहानी सुनानी शुरू की।

रत्नपाल अलकापुरी का राजा था। वह हमेशा इहलौकिक वस्तुओं में डूबा रहता,

उसे परलोक की चिन्ता ही न थी। भक्तों को, पूजा-पाठ करनेवालों को देखता तो वह खीझता। शिकार, जुआ, सङ्गीत, नृत्य आदि व्यसनों में उसको अधिक दिलचस्पी थी।

शिवरात्री आई। उस दिन सब ब्रत रखते हैं। रतजगा करते हैं। शिवालयों में शिव की पूजा व अभिषेक किया जाता है। ये सब चीजें राजा को बिल्कुल पसन्द न थीं। इसलिए शिवरात्री के दिन सवेरा होने से पहले ही घोड़े पर सवार हो, अपने नौकर चाकरों को लेकर वह शिकार के लिए जङ्गल में निकल जाता।

राजा के नौकर चाकरों में कई को उस दिन शिकार पर जाना पसन्द न था, किन्तु वे राजा का विरोध न कर पाते थे। वे जङ्गल में घुसे थे कि इतना अन्धेरा हो गया कि हाथ को हाथ न दिखाई देता था क्योंकि आकाश में काले मेघ छा गये थे। थोड़ी देर में बिजली कौंधने लगी, गरजने लगी। भयङ्कर आन्धी आने लगी। पेड़ झूमने लगे।

नौकर चाकरों को डर लगने लगा-"आज का दिन पवित्र है और हम शिकार खेलने निकले हैं। इसलिए भगवान हमें

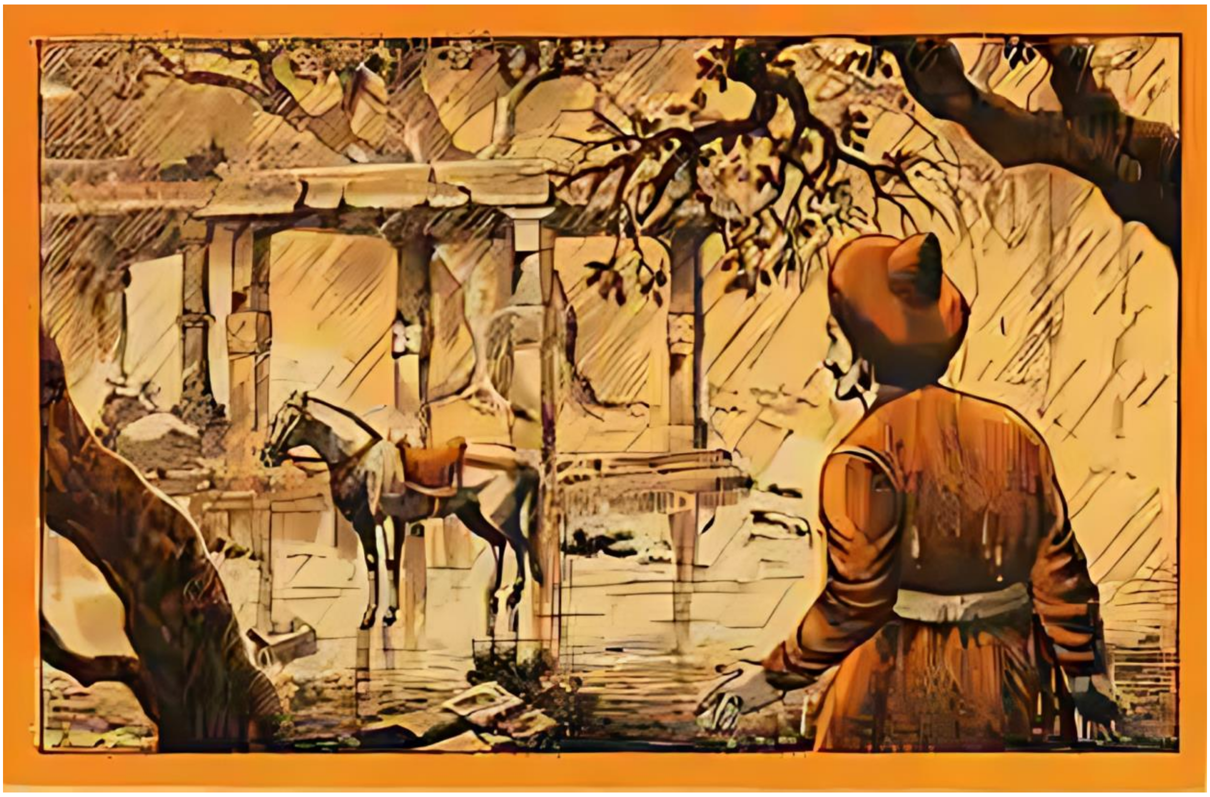


दण्ड देंगे।" सोचकर एक एक करके राजा को छोड़कर सबने घर का रास्ता पकड़ा।

राजा ने दूरी पर एक हरिण देखा। जोश में अपना घोड़ा उस ओर भगाने लगा। हरिण कहीं गायब हो गया। हवा के साथ रिमझिम होने लगी। जङ्गल में कहीं कहीं बिजलियाँ भी गिर रही थीं। राजा से कुछ दूर एक ऊँचे पेड़ पर बिजली गिरी और उसके दो टुकड़े हो गये।

बिजली गिरते ही राजा का घोड़ा बिदक गया और इधर उधर भागने लगा। राजा उसको रोक न सका। घोड़ा भागता गया। रात में बहुत देर बाद, एक मन्दिर के पास खड़ा हो गया। उस मन्दिर के चारों और पेड़ थे। राजा ने एक पेड़ से अपना घोड़ा बाँध दिया। मण्डप में जाकर एक सम्भे के सहारे बैठ मन्दिर की ओर देखने लगा। पहले तो उसने मन्दिर में जाना चाहा। पर यह सन्देह कर कि भगवान क्रुद्ध होंगे, वह न गया।

"भगवान पहले से ही मुझपर क्रुद्ध हैं। आज शिकार पर जाना मेरी गलती है। इसलिए भगवान बिजलियाँ बरसा





रहे हैं। आज मुझसे व्रत करवाया। अब रतजगा भी करवायेंगे।" राजा ने सोचा।

राजा बहुत भीग गया था और आन्धी चल रही थी। वर्षा हो रही थी। अगर वह चाहता तो भी न सो सकता था। उस उजड़े मन्दिर में खम्भे के सहारे बैठे राजा को एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया।

आधी रात के समय मन्दिर का दरवाजा खुला, कोई पुजारी सा व्यक्ति बाहर निकला। इधर उधर देखकर वह अन्दर चला गया और फिर से दरवाजा बन्द कर दिया। इस निर्जन वन में और उजड़े मन्दिर में इस पुजारी का क्या काम? शायद उसी ने वहाँ दिये जलाये हुए थे। थोड़ी देर बाद, पुजारी फिर बाहर आया। जब वहाँ किसी को उसने न देखा तो लम्बी साँस छोड़कर अन्दर चला गया।

इस बार राजा ने पुजारी को गौर से देखा। राजा को शक हुआ कि पुजारी शायद आदमी न था। भूत था। "कोई पुजारी मरकर भी इस उजड़े हुए मन्दिर में भी भगवान की पूजा कर रहा है। कितना पुण्यात्मा है? मैने कभी भगवान को भूलकर भी याद न किया। अब मुझे भी अपना जीवन भगवान को अर्पित कर देना चाहिए।" राजा ने सोचा।

जब तीसरी बार पुजारी बाहर आया तो राजा ने मण्डप से उठकर पुजारी के पास जाकर पूछा- "स्वामी, आप कौन हैं? आप यहाँ कब से रह रहे हैं?"

राजा को देखते ही पुजारी बहुत खुश हुआ-"मैं सोच रहा था कि कोई नहीं आया। आओ, अन्दर आओ। मैं सौ सालों से इस मन्दिर का पुजारी हूँ। मैं सोचता था कि कम से कम शिवरात्री के

दिन तो भक्त आयेंगे। कितने ही सालों बाद तुम आये हो! ईश्वर का अभिषेक करवाओगे?" पुजारी ने धीमे धीमे राजा से पूछा।

"नहीं, मैं पापी हूँ। इस हालत में मेरा मन्दिर में आना उचित नहीं। फिर भी ईश्वर का ध्यान करके मैं इस भवसागर को पार करना चाहता हूँ। अगर आपको मालूम हो तो मुझे एक बात बता सकेंगे?" राजा ने पूछा।

अगर मुझे मालूम होगा तो जरूर बताऊँगा।" पुजारी ने कहा।

"मैं कितने साल और जिउँगा? कब चला जाऊँगा?" राजा ने पूछा।

"तुम पचास साल और जिओगे। और शिवरात्री के पुण्य पर्व पर आधी रात को शरीर छोड़ दोगे।" पुजारी ने कहा।

राजा बड़ा खुश हुआ। उसने पुजारी से विदा ली। मण्डप में वापस जाकर वहीं सवेरे होने तक सोता रहा। फिर अपने शहर लौट गया।

उसने घर जाकर सोचा-"मेरी आयु अभी पचास साल और है। इसी तरह मौज करूँगा, उसके बाद



पचीस साल तक, निश्चल बुद्धि से भगवान का ध्यान करूँगा।"

यह निश्चय करने के बाद विनोद विलास में वह पहले की अपेक्षा और अधिक डूब गया। पचीस वर्ष एक घड़ी की तरह गुज़र गये। यह पता लगते ही राजा को आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा- "देखते देखते ही पचीस वर्ष गुजर गये। फिर भी मुझे संसारिक सुखों से विरक्ति नहीं हुई। अगले पच्चीस वर्षों में भी मैं एकाग्र चित्त से भगवान का ध्यान न कर सकूँगा। इसलिये पन्द्रह वर्ष और इसी तरह जीवन व्यतीत

करूँगा। और अगले दस वर्ष भगवद् ध्यान में बिता कर मोक्ष प्राप्त करूँगा।"

पन्द्रह वर्ष भी यूँहि गुज़र गये। राजा को संसार से विरक्ति नहीं हुई। "एकाग्र होकर क्या तीन वर्ष भगवान का ध्यान करना काफी नहीं है?" उसने सोचा।

जब केवल तीन साल बाकी रह गये तो उसने सोचा-"क्या एक साल काफी नहीं होगा?" वर्ष बीत गया। छः महीनों के तीन महीने रह गये। तीन महीनों में केवल तीन दिन रह गये।

राजा को चिन्ता हुई। फिर भी उसका मन भगवान के प्रति प्रवृत्त नहीं हुआ-"मेरे जीवन के अभी तीन दिन ही बाकी रह गये हैं। परन्तु इन तीन दिनों में एकाग्र चित्त हो मैं भगवान का ध्यान नहीं कर सकता। अगर स्वच्छ मन से भगवान का ध्यान तीन घड़ी भी किया जाय तो मुक्ति मिल सकती है न? मैं अपने जीवन के आखिरी दिन शिवरात्री की रात को ईश्वर के ध्यान में बिता दूँगा। उससे मेरे सारे पाप धुल जायेंगे।" राजा ने सोचा।



राजा के जीवन का आखिरी दिन आया। पर तब भी उसको विरक्ति न हुई। "अगर किसी चीज़ का आनन्द लेना हैं तो इस जीवन में अब एक ही दिन रह गया है। सूर्यास्त होने से पहले जिस किसी चीज का मैं आनन्द लेना चाहता हूँ उसे लेकर उसके बाद ईश्वर का ध्यान शुरू करूँगा।" उसने सोचा।

उसने वही किया, सूर्यास्त हो गया। राजा ने चिन्तित हो, मन्त्री को बुलाकर कहा-"मन्त्री! भगवान का कीर्तन करने बालों को बुलाओ। अब मेरा समय समाप्त हो गया है। आज आधी रात को मेरा जीवन खतम हो जायेगा। अब भगवान का नाम स्मरण करने से में शरीर छोड़कर कैलाश पहुँचूँगा।"

"महाराज! आप क्या कह रहे हैं? आप अभी सौ साल और जियेंगे।" मन्त्री ने कहा।

"नहीं, मैं अपनी मृत्यु के बारे में अच्छी तरह जानता हूँ। इसलिये इधर उधर की बातें न करो और तुरन्त कीर्तन करनेवालों को बुलाओ।" राजा ने कहा।

परन्तु कीर्तन करनेवालों के आने के पहले ही राजा मूर्छित-सा हो गिर गया।



उस मूर्छा से वह न उठ सका। ठीक आधी रात के समय वह मर गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा-"राजा! मुझे एक सन्देह है। पचास साल का समय होने पर भी रत्नपाल भगवान के प्रति अपना मन क्यों नहीं लगा पाया? क्या इसलिये कि उसे भगवान के ध्यान पर विश्वास न था? या भाग्य अनुकूल न था। अगर जान बूझकर इसका उत्तर न दिया तो तेरा सिर फूट जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा-"यह जरूर सच है कि रत्नपाल भगवान का ध्यान करके अपने पापों से मुक्त होकर मोक्ष पाना चाहता था। परन्तु उसकी इच्छा यदि पूरी न हुई तो उसका कारण भी वही था। क्योंकि यद्यपि उसको मोक्ष के सुखों से आसक्ति थी पर वह इहलौकिक सुखों से विरक्त न हो सका था। इन दोनों इच्छाओं के लिए एक जगह स्थान नहीं है, यह वह न जान सका। उसका यह गलत ख्याल रहा कि मुखों का अनुभव करके वह उनसे ऊब बैठेगा। इहलौकिक सुखों का जितना हम अनुभव करते हैं उतना ही हम उनके आधीन होते जाते हैं। यह बात सच है कि एकाग्र चित्त से किया गया एक घड़ी का ध्यान भी काफ़ी है; पर उस एकाग्र चित्त को पाने के लिए कई साल लग जाते हैं। रत्नपाल ने इस दिशा में कोई प्रयत्न न किया। यही उसकी गलती थी। उसके लिए पचास वर्ष भी काफ़ी न थे। और भगवान का ध्यान किये बगैर ही वह मर गया।"

राजा का इस प्रकार मौन भङ्ग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)



सभ्यता

एक भेड़िये ने सभ्यता से रहना चाहा। इसलिए उसने एक कुत्ते से दोस्ती की। भेड़िये ने देखा कि कुत्ता जो कोई रास्ते में दिखाई देता, उससे बातें करता।

वे दोनों मिलकर एक खुली हरी भरी जगह पर पहुँचे। वहाँ उन्हें एक भेड़ आता दिखाई दिया। भेड़िये को भूख लग रही थी। उसने कुत्ते की ओर मुड़कर पूछा-"क्यों कुत्ते? उस भेड़ का क्या किया जाये?"

"जो तुम चाहो करो!" कुत्ते ने कहा। मेड़िये ने भेड़ के पास जाकर कहा-"तुम जमीन पर लेट जाओ।"

"क्यों?" भेड़ ने पूछा।"

"तुम्हें मारकर खाऊँगा।" भेड़िये ने कहा।

"तुम्हें इतनी तकलीफ की क्या जरूरत है? मुख खोलकर खड़े हो जाओ, मैं भागा भागा आऊँगा और तुम्हारे मुख में घुस जाऊँगा।" कहकर भेड़ पीछे हटा और जोर से भागा भागा आया, भेड़िये के पेट से जा टकराया।

उस चोट से भेड़िया बेहोश हो गया। जब होश आया तो सभ्यता को नमस्ते कर वह जङ्गल में चला गया।





[९]

[अद्भुत दीप की सहायता से राजकुमारी से विवाह करके, वह अद्भुत महल में रह रहा था कि अलादीन पर आफत आ पड़ी। जब वह शिकार खेलने गया हुआ था तब मोरोको का जादूगर आया। उसने अलादीन की पत्नी को नया दीप देकर अद्भुत दीप के लिया और उसकी सहायता से उसके महल को और राजकुमारी को अपने देश ले गया। राजा को गुस्सा आ गया। उसने अलादीन से कहा कि यदि वह चालीस दिन में उसकी लड़की नहीं लायेगा तो उसका सिर काट दिया जायेगा। अलादीन नगर छोड़कर चला गया।]

जाते जाते रास्ते में एक नदी आई। उसको देखते ही अलादीन ने आत्महत्या करके अपने कष्ट खतम करने चाहे। क्योंकि वह यह न जानता था कि उसकी पत्नी कहाँ थी और उसे कैसे खोजे।

परन्तु तुरन्त यह अपनी गलती समझ गया। भगवान द्वारा निर्णीत भाग्य को धिक्कारने का अधिकार उसे न था। ऐसा उसने सोचा। उसे यह भी ख्याल आया कि आत्महत्या महापाप है। यह सोचते ही उसका भारी दिल कुछ हल्का हुआ।

अलादीन ने आत्महत्या का ख्याल छोड़ दिया। उसने नदी में उतरकर स्नान किया। पानी से हाथ रगड़े। उसके

अनजाने ही हाथ की अंगूठी के रगड़ते ही अंगूठी का भयङ्कर आकारवाला भूत उसके सामने प्रत्यक्ष हुआ। उसने पूछा-"क्या आज्ञा है?"

अलादीन को पहले तो अचरज हुआ। फिर सम्भलकर, खुशी खुशी उसने कहा-"मेरा महल और उसमें रहनेवाली मेरी पत्नी को वापिस लाओ।"

"दीप के भूत का तिरस्कार करना मेरे बस की बात नहीं है। मालिक! मुझसे यह काम न हो सकेगा।" अंगूठी के भूत ने कहा।

"यह बात है तो कम से कम मुझे उस जगह तो ले जाओ, जहाँ मेरी पत्नी है।" अलादीन ने कहा।

अभी यह कह ही रहा था कि अंगूठी का भूत उसे मोरोको ले गया और उसको उसके महल के सामने खड़ा कर दिया। ठीक उसी समय, जैसे किसी देवता ने प्रेरित किया हो, एक दासी ने खिड़की खोल राजकुमारी से कहा-"मालकिन! इस सायंकाल की धूप में बाग कितना सुन्दर लग रहा है!" दासी को तब अलादीन दिखाई दिया। वह



जोर से चिल्लाई-"मालकिन! वह देखो, मालिक आये हैं।"

राजकुमारी खिड़की के पास दौड़ी दौड़ी आई। पति पत्नी को, एक दूसरे को देखकर आश्चर्य हुआ। राजकुमारी ने अपने आश्चर्य को बिना व्यक्त किये कहा-"जल्दी अन्दर आइये। कोई डर नहीं, जादूगर कहीं गया हुआ है।"

दासी ने जाकर एक खुफिया दरवाजा खोल दिया। अलादीन ने अन्दर आकर अपनी पत्नी का आलिङ्गन किया। दोनों ने थोड़ी देर तक आनन्दाश्रु बहाये।

अलादीन ने अपनी पत्नी से कहा- "मैं जब शिकार खेलने गया था तो मैं कमरे में एक ताम्बे का दीप छोड़कर गया था। वह कहाँ है?"

"उसी के कारण तो हम पर यह आफत आ पड़ी है। परन्तु सारी गलती मेरी नहीं है।" तब राजकुमारी ने सारी घटना सुनाई। "यहाँ आने पर उस ठग ने बताया कि उस दीप में क्या शक्ति थी। उसने यह भी बताया कि उस दीप की शक्ति के कारण ही वह हमारा महल यहाँ ला सका था। "

"उसका तुझसे क्या काम?" अलादीन ने पूछा।

"रोज आकर वह मुझे मनाता ताकि में उसे चाहने लगूँ। इसलिए उसने मुझे बहुत-सी बातें बताई। उसने बताया कि मेरे पिता ने तुम्हारा सिर कटवा दिया है, तुम्हारा पिता मुस्ताफा एक दर्जी था। उसकी दया के कारण तुम इतने बड़े हुए थे। वह बहुत कुछ मना रहा है पर मुझपर कोई असर नहीं होता। इसलिए वह रोज मुँह लम्बा करके चला जाता है। परन्तु मुझे डर लग रहा है कि कहीं वह जबर्दस्ती न करे



और इस बीच ख़ुदा की मेहरबानी से तुम आ गये।" राजकुमारी ने कहा।

अलादीन ने सिर हिलाकर पूछा- "क्या तुम जानती हो वह दीप कहाँ रखता है?"

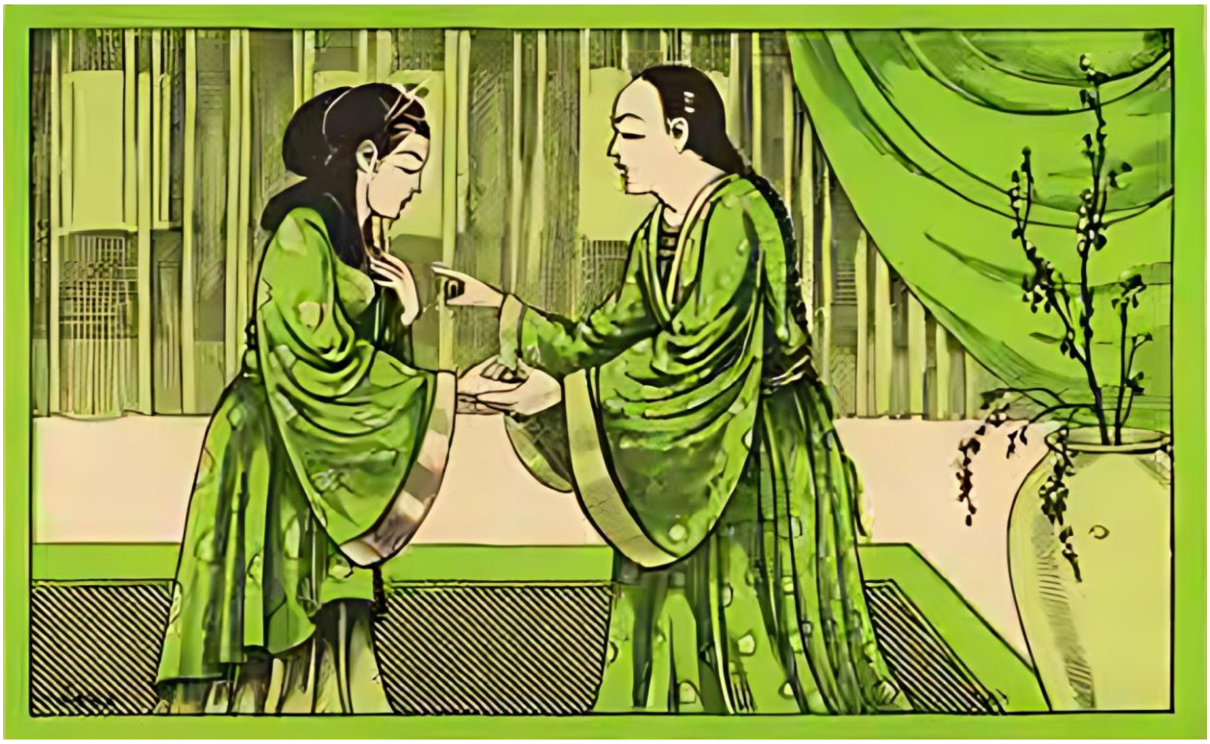
यह उसे कहीं नहीं रखता। कुर्ते के अन्दर रखकर घूमता फिरता है।" राजकुमारी ने कहा।

"बहुत अच्छा! में उसकी खबर लेता हूँ। तुम जरा अलग हो।" अलादीन ने कहा। उसके जाते ही अलादीन ने अंगूठी रगड़ी। अंगूठी के भूत ने प्रत्यक्ष होकर पूछा-"क्या आज्ञा?"

"क्या तुम कुछ विष वगैरह के बारे में भी जानते हो? अगर जानते हो तो ऐसा तेज विष लाओ जो हाथी को भी क्षण भर में गिरा सके।" अलादीन ने भूत से कहा।

भूत अदृश्य हो गया और थोड़ी देर में उसने अलादीन को एक पुड़िया लाकर दी।

भूत को भेजकर अलादीन ने अपनी पत्नी को बुलाया। उसके हाथ में पुड़िया दी और साफ़ साफ़ बता दिया कि जादूगर के आने पर वह क्या क्या करे। फिर वह एक अलमारी में छुप गया।





राजकुमारी को अलादीन का बताया हुआ काम बिल्कुल पसन्द न था। तो भी उसकी आज्ञा पर उसने अपनी दासी को बुलवाया। बाल ठीक करवाये। शृङ्गार किया। बढ़िया साड़ी पहनकर गहने लगाये। गले में मोतियों का हार पहना। हाथ-पैर पर भी गहने पहने। इत्र लगाये। जादूगर की इन्तज़ार करती वह अपने गद्देदार बिस्तर पर लेट गई।

अपने समय पर जादूगर आया। उसके आते ही राजकुमारी ने मुस्कराते हुए उसकी अगवानी की। उसको बैठने के लिए कहा। आनन्द और आश्चर्य के साथ जादूगर एक आसन पर बैठ गया।

"शायद आपको आश्चर्य हो कि मैं कैसे बदल गई। परन्तु गुजरे हुए पति के लिए कितने दिन यो रोऊँ धोऊँ? मैं आनन्द चाहती हूँ। मैंने कभी कष्ट नहीं झेले हैं। अगर मैं दुखी भी होऊँ तो क्या जो चले गये हैं वे बापिस आयेंगे? मेरी अक्ल भी खूब है। बातें ही करती रहीं और आपकी आवभगत भी न की।" कहती वह एक तख्त के पास गई। जादूगर की ओर पीठ करके उसने एक ग्लास में जहर डाल दिया और उसमें शरबत मिला दी और दासी से वह जादूगर को दिलवाया।

"तुम्हारी मुस्कराहट की मिठास के मुकाबले में यह शरबत किस काम का है?" कहकर जादूगर ने शरबत पी और फौरन पेड़ के ठूँठ की तरह कालीन पर चारों खाने चित गिर पड़ा।

जादूगर के गिरने का शब्द सुनते ही अलादीन अलमारी में से बाहर निकला। यह पता लगाकर कि जादूगर मर गया है; उसने उसके कुर्ते में से अद्भुत दीप को

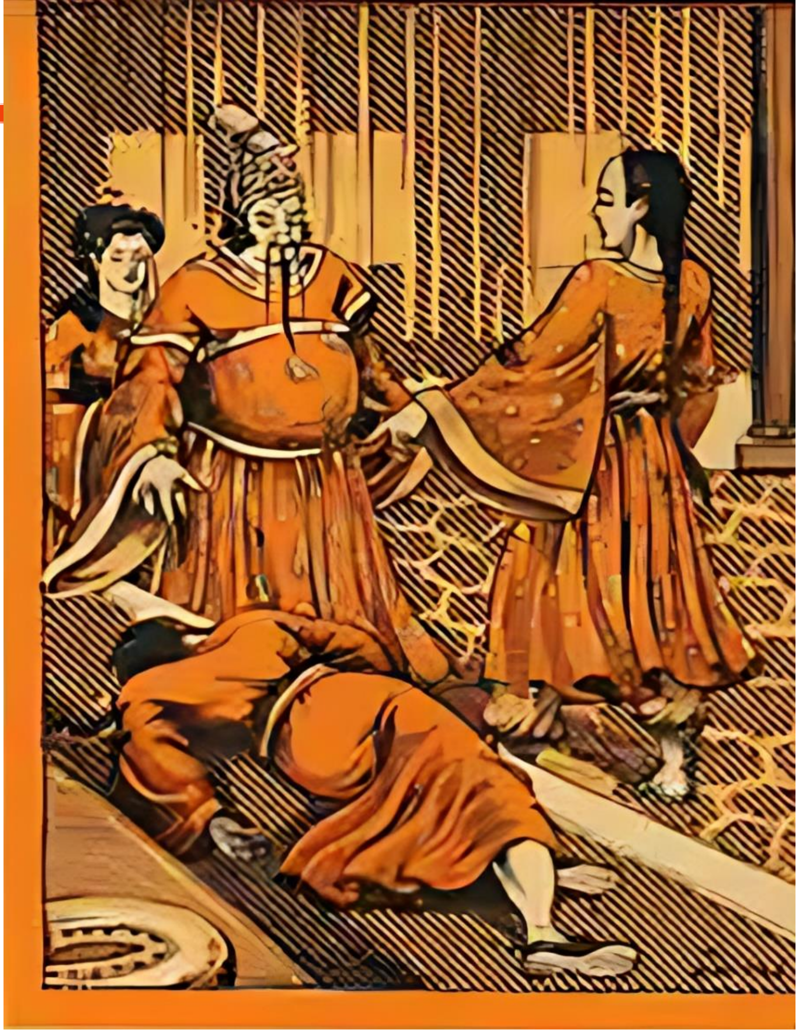
बाहर निकला। फिर उसने अपनी पत्नी को अलग भेजा। दीप को रगड़कर दीप के भूत को बुलाया।

"इस महल को जैसा यह है वैसा ही इसकी जगह ले जाओ।" अलादीन ने भूत से कहा।

तुरन्त अलादीन का महल अपनी जगह पहुँच गया। अलादीन ने राजकुमारी को बुलाकर कहा-"अब हम फिर अपने घर आ गये हैं। परन्तु इस समय रात में पिताजी से मिलना अच्छा नहीं, कल मिलेंगे।"

जबसे वे दोनों अलग हुए थे तबसे पति-पत्नी ने खाना-सोना छोड़ रखा था। परन्तु तब वे आराम से खा-पीकर सो गये। अगले दिन सवेरा हुआ। सवेरा होते ही अपनी लड़की के बारे में राजा की रोने की आदत हो गई थी। उसने खिड़की से बाहर जो देखा तो अलादीन के महल को अपनी जगह पाया।

वह सन्तोष से पागल सा हो गया। वह भागा-भागा अलादीन के महल में गया। छूकर देखा। वह भ्रम न था। वह सीढ़ियों पर भागता अलादीन और अपनी लड़की के कमरे में गया। प्रेम से अपनी



लड़की का आलिङ्गन किया और आनन्द के मारे रोने लगा।

"बेटी! मैंने न सोचा था कि मैं फिर तुम्हें देख सकूँगा। तुमने बड़ी मुसीबतें झेली होंगी। तुम तो मुझसे बिछुड़कर एक क्षण भी न रह पाते थे, बताओ, क्या हुआ था?" उसने अपनी लड़की से पूछा।

राजकुमारी ने सब बताकर कहा-"गलती मेरी थी। जो चीज मेरी न थी, उसे दूसरे को मैने क्यों दी?"

फिर अलादीन ने जादूगर का शव दिखाकर राजा से कहा-"यह है

मुसीबतों का जिम्मेवार। यह हत्यारा जरूर नरक जायेगा।"

राजा जान गया कि अलादीन निर्दोष था। उसने उसको गले लगाकर कहा-"बेटा, तुम बुरा न मानना कि मैंने तुम्हारे साथ सख्ती बरती। मुझे अपनी लड़की पर बहुत प्रेम है। यह और कोई समझ सके या न समझ सके, तुम्हें जरूर समझना चाहिये। मैं उसके लिए राज्य का भी त्याग कर सकता हूँ।"

"आपकी कोई गलती नहीं है। मेरे कारण ही आपकी लड़की चली गई है, आपने सोचा होगा। यह एक तरह से सच भी है। क्योंकि मुझे पहले ही जान लेना चाहिये था कि जादूगर की नजर अद्भुत दीप पर है और जैसे तैसे वह उसे हड़प लेगा। मुझे सावधान रहना चाहिये था। मैं अपना सारा किस्सा आपको बताता हूँ, तब ही आप इस जादूगर की दुष्टता समझ सकेंगे।" अलादीन ने कहा।

"पहले इस दुष्ट की लाश दूर करो।" राजा ने कहा। अलादीन ने अपने सेवकों को बुलाकर कहा-"इस शव को जलाओ और राख को गन्दे नाले में फेंक दो।"

ये खबरें शहर में पहुँची। जनता को सन्तोष हुआ कि राजकुमारी सकुशल वापिस आ गई थी। जादूगर का दहन संस्कार देखने लोग झुण्ड बनाकर गये।

राजा ने घोषणा कर दी कि नगर में खुशियाँ मनाई जायें। कैदियों को छोड़ दिया गया। गरीबों को दान दिया गया। दोनों महलों में आतिशबाजियाँ छोड़ी गई।

अलादीन के कष्ट दूर हुए। वह अपनी पत्नी और बूढ़ी माँ के साथ सुख से रहने लगा।

(अगले अङ्क में समाप्त)





(गताङ्क से आगे)

आनन्दोद्यान में पहुँच कर जब खलीफा ने फाटक खुला देखा तो उसे आश्चर्य हुआ। इब्राहीम ने कभी भी ऐसी लापरवाही न की थी। जब वह महल के पास पहुँचा तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया। अन्दर कहीं भी प्रार्थना वगैरह, नहीं हो रही थी।

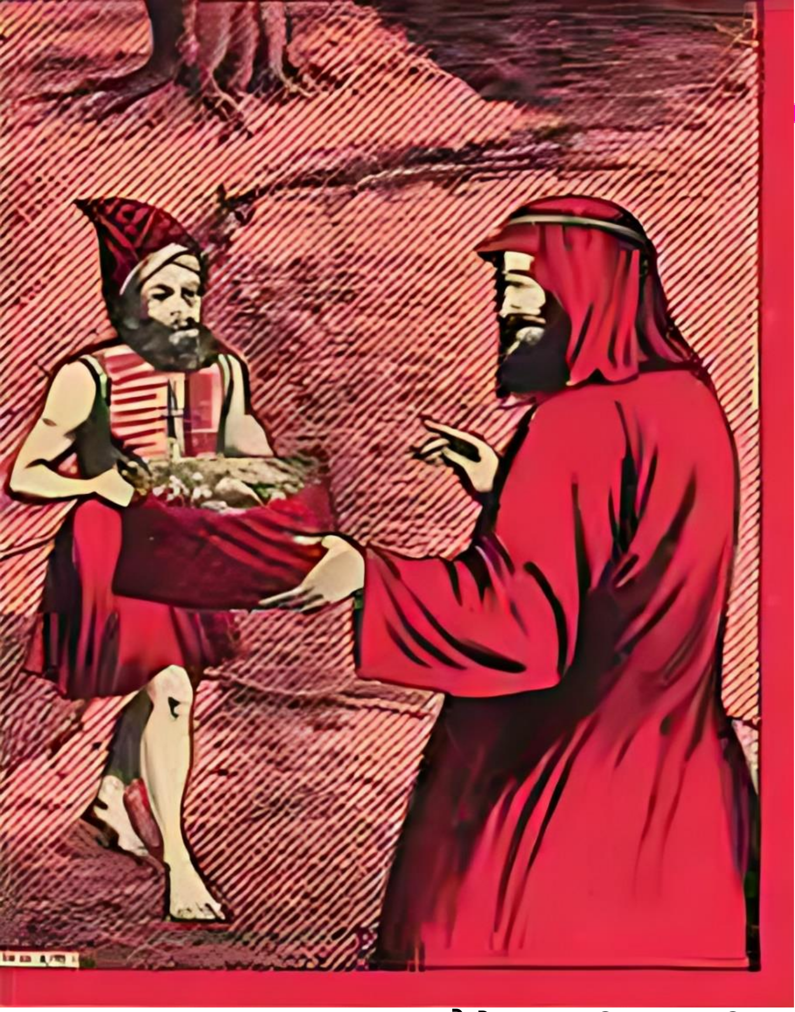
"अन्दर क्या हो रहा है.... जरा चुप चाप देखूँ तो...." कहकर खलीफा, जाफर की सहायता से एक पेड़ पर चढ़ा। खिड़की से अन्दर देखा। वहाँ एक सुन्दर युवती और युवक थे। इब्राहीम, उन दोनों के बीच, शराब का पात्र हाथ में लिये कह रहा था- "बेटी, जबतक तुम नहीं गाओगी तबतक हमारा आनन्द पूरा नहीं होगा।"

प्रियसखी को प्रेरित करने के लिए बूढ़े ने स्वयं एक गीत गाया। यह देख खलीफा को बहुत गुस्सा आया। उसने पेड़ से उतरकर कहा-"बाग के माली के पोते का संस्कार कैसे शास्त्रोक्त रीति से हो रहा है, यह तुम भी देख लो।"

जाफर ने पेड़ पर चढ़कर तीनों को मौज करते देखा। वह उतरकर खलीफा के पैरों पर पड़ गया।

"जाफर! मैंने तुम्हें माफ कर दिया, देखें और क्या होता है, चलो पेड़ पर चढ़ो।" खलीफा ने कहा।

इस बीच, प्रियसखी के लिए माली एक सितार लाया। सितार बजाते बजाते उसने एक गीत गाया। उसका गला बड़ा मीठा था। खलीफा ने जाफ़र की ओर मुड़कर



कहा-"जाफर, मैने इतनी अच्छी आवाज कभी न सुनी।"

"तो इसका मतलब यह कि हुजूर का गुस्सा ठण्डा हो गया है।" जाफर ने पूछा। खलीफा ने कहा-"हाँ।" दोनों पेड़ पर से उतर आये। फिर खलीफा ने कहा-"अब मैं अन्दर जाकर जानना चाहता हूँ कि वे कौन हैं?" "अगर आप यकायक अन्दर गये तो वे घबरा जायेंगे। वेष बदलना होगा।" जाफर ने कहा।

उस समय जलाशय के पास कुछ आहट सुनाई दी। टिग्रिस नदी से उसमें पानी आता था। पानी के साथ मछलियाँ भी आती थी। इब्राहीम रोज उन्हें खाने को देता था। उन्हें पकड़ता न था। इसलिये वहाँ हजारों मछलियों थीं। नदी में जिन मछुओं को मछलियाँ नहीं मिलती थीं, वे कभी कभी इब्राहीम की आँख बचाकर बाग में घुस जाते और मछलियाँ चुरा ले जाते। उस दिन करीम नाम का मछुआ बाग का दरवाजा खुला देख अन्दर आया और खलीफा द्वारा पकड़ लिया गया। खलीफा ने उसे पहचान करके कहा-"तू यहाँ क्या कर रहा है?"

करीम ने भी खलीफा को पहचान लिया। उसने कहा-"हुजूर माफ़ करें। भूख के मारे चोरी कर रहा था। गरीब हूँ।"

खलीफा ने हँसकर कहा-"अच्छा जाने दो! जाल फेंको, देखें तेरी किस्मत कैसी है।" करीम ने जाल फेंका। बहुत- मछलियाँ जाल में उसने ऊपर खींची।

".... तेरा भाग्य अच्छा मालूम होता है। तुम अपने कपड़े उतारकर मुझे दे दो।" खलीफा ने कहा।

करीम ने बिना कुछ कहे अपने कपड़े उतार कर दे दिये। खलीफा ने वे कपड़े

पहन लिये। टोकरे में कुछ मछलिया डाल ली और जाकर महल का दरवाजा खटखटाया।

माली ने दरवाजा खोला। खलीफा को उसने न पहचाना। उसने पूछा-"करीम! तुम किस काम पर आये हो?"

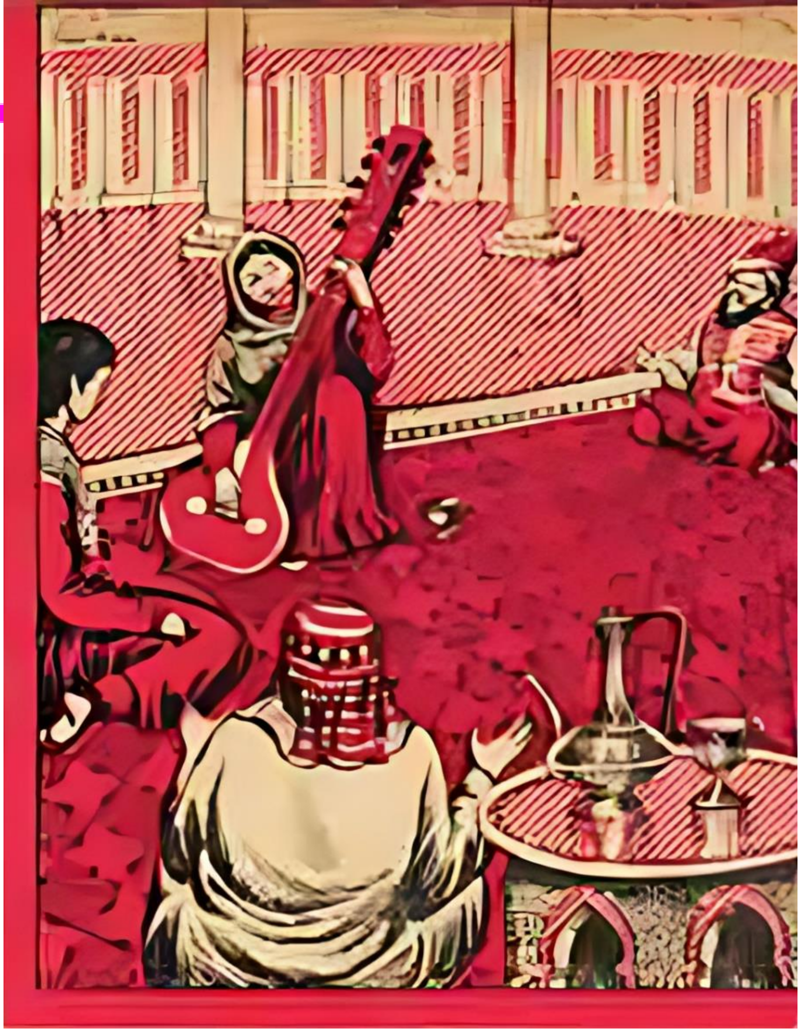
"यह जानकर कि तुम्हारे यहाँ मेहमान आये हैं, मछलियाँ पकड़कर लाया हूँ।" खलीफा ने कहा।

प्रियसखी उठकर आई। मछलियों को देखकर उसने कहा-"उन्हें तलकर ले आओ।"

खलीफा मान गया। बाहर आकर उसने यह बात जाफर से कही। वे इब्राहीम के झोपड़े में गये।

आग जलाकर, खलीफा ने मछलियों के टुकड़े करके, उनको स्वयं तला। उसकी तली हुई मछलियों को, माली, अलीनूर, और इब्राहीम ने खाया।

अलीनूर ने खलीफा के हाथ में तीन दीनारों को रखते हुये कहा-"तुमने, जो हमारा उपकार किया है, उसके बदले में ये लो। एक जमाना था, जब मैं तुम्हारी गरीबी दूर कर सकता था। पर अब मजबूर हूँ इतना ही दे सकता हूँ।"



खलीफा ने उन दीनारों को आँखों पर लगाकर टोकरी में रखते हुए कहा-"आपने जो दिया सो दिया। मैं इनका गाना सुनना चाहता हूँ। गाने पर तो मैं जान दे देता हूँ।" अलीनूर के कहने पर प्रियसखी ने एक बार और गाया। खलीफा आनन्द में कहने लगा "वाह, वाह...क्या खूब क्या खूब।"

यह देख अलीनूर ने कहा-"लगता है, यह तुम्हें जँच गई है। इसे तुम ही ले लो।" वह यह कह चला गया।

प्रियसखी ने आँसू बहाते हुये पूछा-"अलीनूर, मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो?"

यह देख खलीफा को आश्चर्य तो हुआ ही; दुःख भी हुआ। उसने अलीनूर से पूछा-"क्यों भाई, इस गुलाम को तुम किसी के यहाँ से उठा कर तो नहीं लाये हो?" अलीनूर ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाई। सब सुनकर खलीफा ने पूछा-"अब क्या करने जा रहे हो!"

"अल्लाह की दुनियाँ बहुत बड़ी है। कई रास्ते हैं।" अलीनूर ने कहा।

"मैं एक गरीब मछुआ हूँ। तुम्हारी मदद तो न कर सकूँगा.... अगर तुमने जो मैं कहूँ सो किया तो तुम्हारे कष्ट ख़त्म हो जायेंगे।" कहकर खलीफा ने माली से कागज मँगवाया। और उस पर बसरा के सुल्तान के नाम यह चिट्ठी लिखी।

"बसरा के सुल्तान सुलेमान को खलीफा हसल अल रशीद लिखते हैं कि यह चिट्ठी लानेवाला वज़ीर अलिफदल का लड़का जलीनूर है। यह चिट्ठी पढ़ते ही तुम गद्दी खाली कर दो और अपनी जगह अलीनूर को बिठाओ। इसमें किसी प्रकार की देरी न हो।" उस चिट्ठी पर खलीफा ने अपनी सील लगा दी। चिट्ठी को अलीनूर को देते हुए कहा-"इसे बसरा



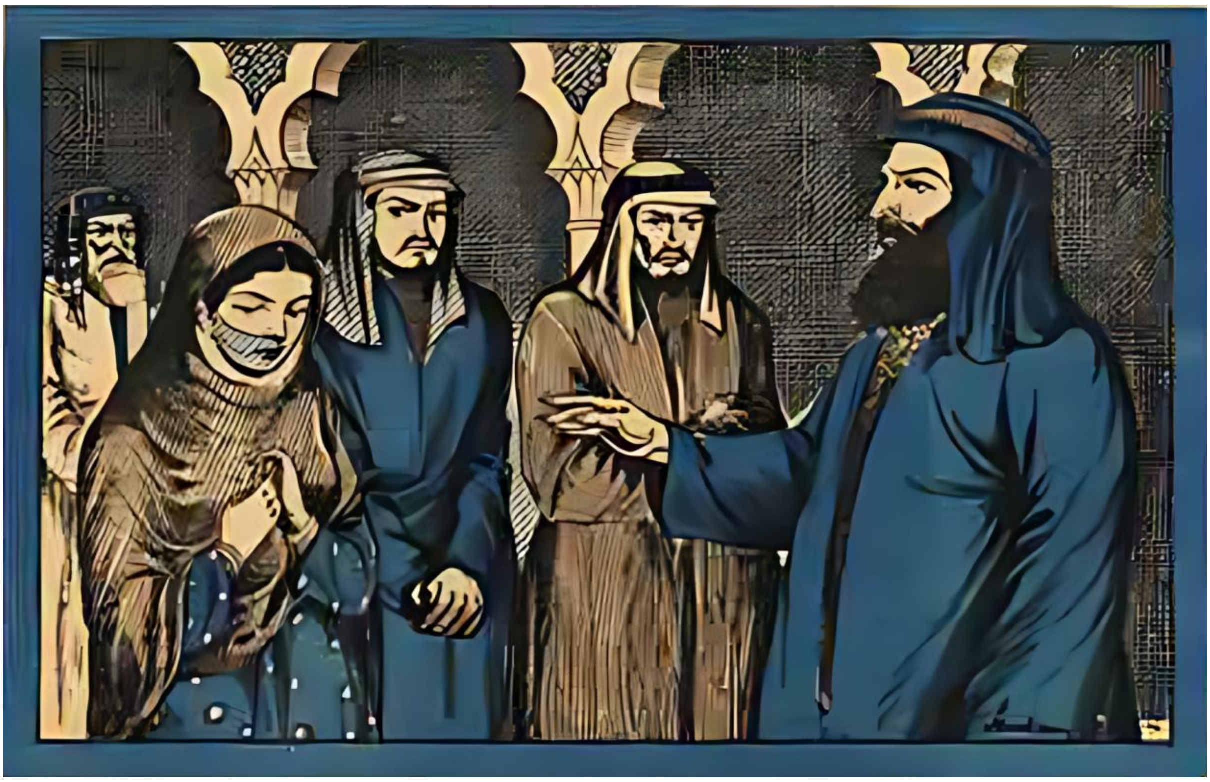
के सुल्तान को दो। तुम्हारे सब कष्ट समाप्त हो जायेंगे।"

अलीनूर तभी वहाँ से चला गया। प्रियसखी रोने लगी। माली ने खलीफा की ओर मुड़कर कहा- "देख, पापी तुने क्या किया है? इन दोनों को अलग अलग कर दिया है। तीन पैसे की मछलियों के लिए तीन दीनारें पाकर तसल्ली जो कर लेते।"

खलीफा की आँखें आग सी बरसाने लगी। उसके ताली बजाते ही वजीर जाफर और मसूर अन्दर आये। जाफर ने खलीफा के कपड़े उतार दिये और उनको उनके असली कपड़े पहनाये। माली इब्राहीम की आँखे चिट्टी कौडी सी हो गई। उसका नशा जाता रहा। वह खलीफा के पैरों पर पड़ गया।

स्खलीफा ने माली को क्षमा कर दिया। फिर प्रियसखी से कहा-"अब तुम्हें मालूम हो ही गया कि मैं कौन हूँ। जब तक तुम्हारे पति के यहाँ से खबर न आये तबतक हमारे घर में ठहरो।"

प्रियसखी खलीफा के साथ राजमहल गई। वहाँ उसे एक कमरा, दासी वगैरह, दिये गये। खलीफा ने उससे कहा कि





तुम्हारा पति बसरा का सुल्तान होने जा रहा है। तुम रानी बनोगी। इसलिये बेफिक्र रहो।" वह वहीं रहने लगी। थोड़े दिनों में अलीनूर बसरा पहुँचा। उसने सुल्तान के दर्शन किये और उसको खलीफा की दी हुई चिट्ठी दे दी। सुल्तान ने खलीफा की सील देखकर, गौरव पूर्वक खड़े होकर, चिट्ठी को तीन बार आखों पर लगाकर, खोलकर पढ़ा। फिर उसने कहा-"खलीफा का हुक्म ख़ुदा का हुक्म है।"

खलीफा के हुक्म के मुताबिक अपनी गद्दी अलीनूर को देने के लिए सुल्तान ने शहर के काजी और अमीरों को बुलवाया। उस समय वहाँ वजीर सावी भी आया। सुल्तान ने, सावी को खलीफा की चिट्ठी पढ़ने को दी। पत्र पढ़कर उसने चिट्ठी का वह भाग फाड़ दिया, जिस पर खलीफा की सील थी।

"नीच! क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? तुमने यह काम क्यों किया?" सुल्तान ने धमकाया।

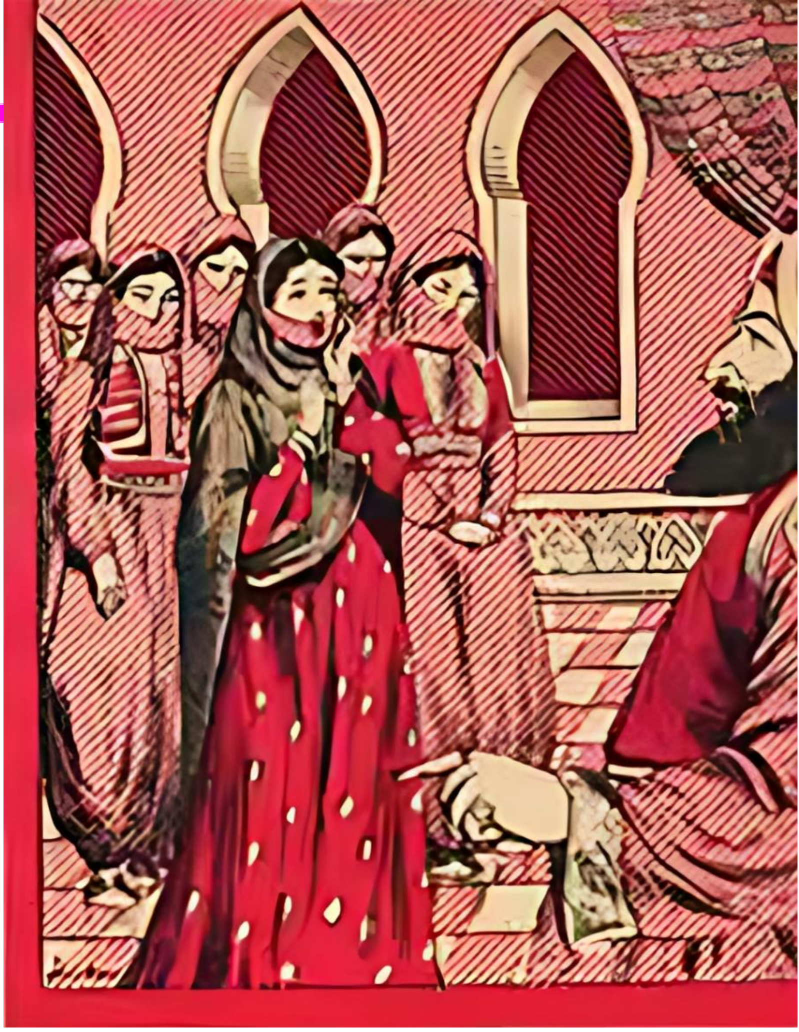
"आप विश्वास न कीजिये कि यह दुष्ट खलीफा से मिला है। यह मक्कार है। इसने स्वयं यह चिट्ठी लिखी है। अगर खलीफा लिखना चाहते तो वे अपने कागजों पर अपने लेखकों से लिखवाते। उस पर राजकर्मचारियों की सीलें भी होती।"

"तो तुम अब क्या करने के लिए कहते हो?" सुल्तान ने पूछा।

"इसे आप मुझे सौप दीजिये। मैं सच मालूम कर लूँगा। मैं इसके साथ अपना एक कर्मचारी बगदाद भेजूँगा और वहाँ से विश्वसनीय पत्र मँगवाऊँगा। अगर इसने हमें धोखा दिया है तो इसको उचित दण्ड में स्वयं दूँगा।"

इसप्रकार सावी के कहने पर सुल्तान को विश्वास हो गया कि अलीनूर अपराधी था।

उसने अपने सिपाहियों से अलीनूर को खूब पिटवाया। वह जब बेहोश हो गया तो जेल के अधिकारियों को बुलवाकर उसे जेल में डाल दिया।



जेल के अधिकारी का नाम कुत्तेब था। वह अलीनूर को जेल में ले गया। और वहाँ उसने अलीनूर की हथकड़ियाँ खोल दी। उसने कोठरी को स्वयं साफ कर बिछौना विछाया। फिर अलीनूर से कहा- "हुजूर, मै आपके पिता का बहुत एहसानमन्द हूँ। इसलिये आपको मेरी वजह से कोई हानि न होगी।"

उसके बाद, चालीस दिन तक अलीनूर को जो कुछ सुविधायें दी जा सकती थीं, उसने वे सब दीं। और रोज जब वह सावी को रिपोर्ट भेजता तो लिखता कि कैदी को नाना प्रकार से सताया जा रहा था। अलीनूर के कैद में तीस दिन रहने के बाद एक दिन जब खलीफा, उसकी कोठरी के पास से जा रहा था, तो अन्दर से उसको किसी के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने नौकरों से रोनेवाली के बारे में पूछा। वे जाकर प्रियसखी को बुलाकर लाये। खलीफा उसको बिल्कुल भूल गया था। इसलिये प्रियसखी ने अपना सारा किस्सा सुनाकर कहा-"अलीनूर को गये हुये महीना हो गया है। अब तक उसके बारे में कुछ नहीं मालूम हुआ है।"

तब खलीफा को सब कुछ याद हो आया। उसने एक नौकर द्वारा अलीनूर को एक बहुत अच्छा ईनाम भेजा। जब वह ईनाम बसरा पहुँचा तो अलीनूर कैद में इकतालीसवाँ दिन काट चुका था। सुल्तान यह न जान सका कि वह किसने किसको भेजा था। साबी से जब पूछा तो उसने कहा कि उसे भी न मालूम था।

परन्तु उसे सन्देह हुआ कि कहीं यह ईनाम सुल्तान के यहाँ से अलीनूर के नाम न आया हो। अगर यह ठीक था तो अलीनूर का जीवित रहना उसके लिए अच्छा न था। इसलिये सावी ने सुल्तान से कहा- "आपने आज्ञा दी थी न कि इस अलीनूर को मरवा दिया जाय?"

"मौके पर याद दिलाया। तुरन्त उसका सिर कटवा दो।" सुल्तान ने कहा।

इस बीच, खलीफा को सन्देह हुआ कि अलीनूर जीवित था कि नहीं। अगर वह जीवित होता तो तब तक उसके यहाँ से कोई न कोई खबर आ ही जाती। इसलिये उसने जाफर को बुलाकर कहा-"तुम कुछ सशस्त्र सैनिकों को लेकर बसरा जाओ। अगर अलीनूर बसरा का सुल्तान हो तो ठीक है। अगर किसी ने उसका अहित किया हो तो उसको पकड़कर लाओ। मैं उसका खून अपनी आँखों देखा चाहता हूँ।"

उसी दिन, जाफर कुछ सिपाहियों को लेकर बसरा के लिए रवाना हुआ। बसरा में अलीनूर को कैद से दरबार में लाया गया। यह जानकर कि अलीनूर का सिर



कटवाया जा रहा था, लोग हजारों की संख्या में वहाँ आये। उनको अलीनूर पर अभिमान था।

साबी ने अपने सैनिकों से कहा- "इस दुष्ट को गधे पर चढ़ाकर बाँधो।"

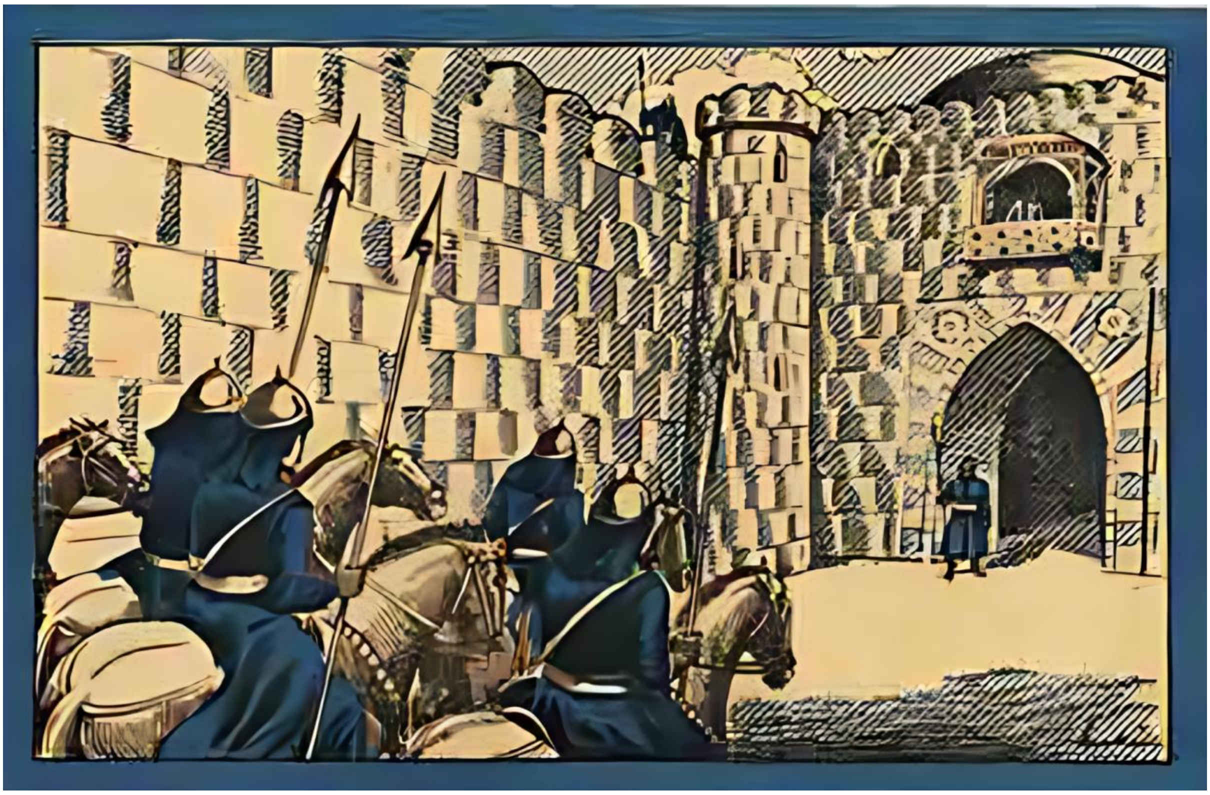
"अलीनर, इस बूढ़े को मारने दो, अनुमति दो।" भीड़ में से आवाज आई।

"तुम जल्दबाजी न करो। जो कुछ लिखा है वह होकर रहेगा।" अलीनूर ने कहा।

तब साबी के सैनिक, अलीनूर को गधे पर बाँधकर बध्यस्थल ले गये। सिर काटने बाला जल्लाद तलवार लिये तैयार खड़ा था।

पास के राजमहल की खिड़की से सुल्तान के हुक्म देने की देरी ही थी। इसलिये सब खिड़की की ओर देखने लगे।

बहुत देर हो गई। मगर सुल्तान को सिर खिड़की में न दिखाई दिया। आखिर उसका सिर बाहर तो दिखाई दिया पर उसकी नजर बध्यस्थल की ओर न थी। दूरी पर आते जाफर और उसके सैनिक सुल्तान को दिखाई दिये, वह फिर अन्दर गया। उसने कोई सैनिकों से कहा-"हमारे लिये बगदाद से कोई आ रहे हैं। उनका स्वागत करो।"



जाफर को लोगों के मुँह मालूम हुआ कि अलीनूर को मृत्यु की सजा दी गई है। वह लाल पीला होता हुआ सुल्तान के पास गया। उससे कहा- "अगर अलीनूर का बाल बाङ्का हुआ तो मैं अपराधियों का सिर फटबादूँगा। अलीनूर कहाँ है?"

सुल्तान ने बध्यस्थल से अलीनूर को बुलवाया। जाफर ने अलीनूर को बसरे का सुल्तान घोषित किया और सुल्तान और साबी को कैद में इटवा दिया।

नये मुल्तान के सम्मान में तीन दिन तक उल्लास उत्सव मनाये गये। चौथे दिन जाफर बगदाद के लिए निकला। "मैं खलीफा के दर्शन करना चाहता हूँ। मैं भी आपके साथ बगदाद आऊँगा।" अलीनूर की यह इच्छा भी जाफर मान गया।

उनके बगदाद पहुँचते ही जाफर ने खलीफा से जो कुछ गुजरा था, बताया। खलीफा ने सब सुनकर अलीनूर की ओर मुड़कर कहा- "अलीनूर इस सावी का, जिसने तुम्हें सताया था, तुम अपने ही हाथों गला काटो।" अलीनूर तरवार लेकर सावी के पास गया। "अलीनूर, में दुष्ट प्रकृति का हूँ। मैंने अपनी प्रकृति के अनुरूप कार्य ही किये हैं। तुम अच्छे स्वभाव के हो। तुम अपने स्वभाव के अनुरूप कार्य करो।" सावी ने कहा।

यह सुनते ही अलीनूर के हाथ से तलवार गिर गई। सब ने अलीनूर की प्रशंसा की। खलीफा को सुल्तान और सावी को माफ करना पड़ा।

उसके बाद खलीफा ने अलीनूर को कुछ दिन अपने पास रखा। फिर उसको बहुत से उपहार देकर बसरा भेजा। अलीनूर, प्रियसखी को साथ ले गया। वह बहुत सालो तक बसरे का सुल्तान रहा।

(समाप्त)





एक गाँव में एक किसान रहा करता था। उसका एक लड़का और एक लड़की थी। यथा समय लड़के की शादी हुई और बहू घर में आई। उसके बाद घर मैं तीन स्त्रियाँ हो गई। किसान की पत्नी, लड़की और बहू।

जब तीन स्त्रियाँ एक घर में हों तो कुछ न कुछ उथल पुथल होती ही रहती है। इस घर में क्योंकि दो स्त्रियों माँ-बेटी थी, इसलिए उनके तौर-तरीके एक ही तरह के थे। मगर बहू दूसरे घर की थी। उसकी आदतें भिन्न थीं। उसका करने का तरीका भिन्न था। इसलिए माँ-बेटी ने बहुत प्रयत्न किया कि वह भी उनकी तरह काम किया करे। बहू थी, यह सोचकर कि जो वे कह रही थी शायद वह समझ नहीं पा रही थीं, वे बार बार कहती जाती थी।

एक दिन किसान का साला युँहि उन्हें देखने आया। कहीं इधर उधर का कुछ का कुछ न हो जाये और उसका भाई बुरा मान जाये, यह सोच किसान की पत्नी हर चीज का स्वयं ख्याल करने लगी। उसने घड़ा लेकर कुँए की ओर जाते हुए बहू से कहा-"चूल्हे पर शाक बन रहा है, जरा उसमें नमक डाल देना। कहीं भूल न जाना।"

दो दिन पहले बहू शाक में नमक डालना भूल गई थी। सास ने वह याद दिलाने के लिए ही बहू से यह कहा था।

जब हाथ का काम खतम हो गया तो बहू शाक की कढ़ाई में थोड़ा नमक डालकर और काम देखने लगी।

थोड़ी देर बाद उसकी ननद उपले बनाकर अन्दर घर में आई। उसने चूल्हे पर शाक की कढ़ाई देखी।

"वह मूर्ख यूँहि शाक में नमक डालना भूल जाती है। मामा भी आये हुए हैं।" उसने भी मुट्ठी भर नमक उसमें डाल दिया। फिर वह गौ भैसों को चारा देने चली गई।

इतने में सास पानी का घड़ा लेकर लौटी। चूल्हे पर शाक की कढ़ाई को देखकर उसने सोचा-"उस बेअक्ल को बार बार याद दिलाने से तो अच्छा यही है कि मैं खुद करती जाऊँ।" सोचकर उसने भी मुट्ठी भर नमक कढ़ाई में डाल दिया।

दुपहर को किसान और उसका साला भोजन के लिए बैठे। साले ने शाक के साथ पहला कौर लिया। "अरे यह क्या? क्या इसमें नमक डालना भूल गई हो?"

तुरन्त किसान की पत्नी ने कहा-"यह क्या कह रहे हो भैया? मैंने इसमें नमक डाला है।"

तुरन्त लड़की ने कहा-"मैंने मुट्ठी भर नमक डाला है।"

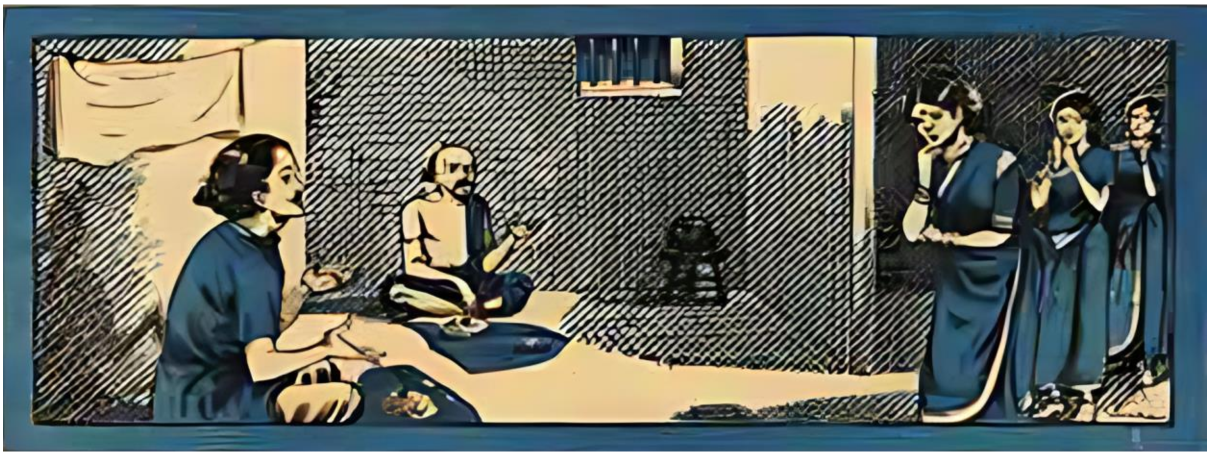
"आपने कहा था कि नमक डालना मत भूलना। इसलिए मैंने भी डाला है।" बहू ने कहा।

"तो यूँ कहो। तभी शाक में नमक ही नमक है।" किसान के साले ने हँसते हुए कहा।

घर की स्त्रियों में एकता न देखकर किसान को गुस्सा आया।

आज से जो जिसका काम है वह ही वह करे, एक दूसरे का काम न किया करो।" उसने धमकाया।

उसके बाद इधर उधर की उटपटाङ्ग घटनाएँ उस घर में नहीं हुई।





एक गाँव में दो भाई रहा करते थे। उनकी शादियाँ हो गई थीं। उन्होंने पिता की सम्पत्ति को बराबर बराबर बाँट लिया था और अपने अपने अलग घरवार बसा लिये थे। परन्तु कुछ दिनों बाद उनका भाग्य भी अलग अलग हो गया। बड़े भाई के हर साल बच्चा होता। उसकी सारी सम्पत्ति चली गई। छोटे भाई का भाग्य ने साथ दिया। वह सम्पन्न हो गया। आखिर बड़े भाई की हालत बहुत बुरी हो गई। पत्नी और बच्चों के पहनने के लिए चीथड़े तक न थे। उनके पास पेट भरने के लिए माण्ड तक न थी। बुरी हालत थी।

इस हालत में बड़े भाई ने स्वाभिमान भूलकर, छोटे भाई के पास जाकर कहा-"भाई, बच्चे भूख के मारे हाय हाय कर रहे हैं। भगवान की दया से तुम्हारे पास इतना है जो तुम मदद कर सको, वह करो। मेरा और कोई नहीं है।"

छोटे भाई ने थोड़ी देर सोचा। "सहायता कर तो हूँ परन्तु इस समय मेरे जिम्मे भी बहुत-सा खर्च है। कल मेरा जन्म दिवस है। इसलिये एक दावत का इन्तजाम किया है। बड़े बड़े लोगों को बुलाया है। बड़ों को बुलाना ही नहीं चाहिये, जब बुलाते हैं तो उनका यथोचित आदर सम्मान करना चाहिये। कितना खर्च होगा, यह तुम ही सोचो। इस खर्च के बाद अगर कुछ बचा तो उसे तुम्हें देने में मुझे कोई एतराज नहीं है। कल दावत में तुम भाभी और बच्चे आओ। तब ये बातें फुरसत से हो सकेंगी। जरूर आना।"



"तुम जब ऐश्वर्य के साथ जन्म दिवस मना रहे हो तो भला हम क्यों?" बड़े भाई ने कहा।

"गरीबी आ पड़ी तो क्या हुआ, क्या हम एक बाप के दो बच्चे नहीं हैं?"

बड़ा भाई खुशी खुशी घर गया। उसने अपनी पत्नी से कहा-"कल मेरे भाई का जन्म दिवस है। उसने हमें दावत में बुलाया है।"

"वाह! अगर मैं इन चीथड़ों में गई तो क्या सब हमें देखकर हँसेंगे नहीं?" पत्नी ने कहा।

"अब बुलाया है, तो न जाना अच्छा न होगा। क्या दुनियाँ हमारी स्थिति नहीं जानती है?" पति ने पूछा।

अगले दिन बड़े भाई का परिवार छोटे भाई के यहाँ गया। सारा घर बड़े बड़े रईसों से भरा हुआ था। वहाँ किसी ने भाई और उसके परिवार को न देखा। कोई खातिरदारी न की। भोजन के समय उनके बैठने के लिए भी जगह न थी।

बड़े भाई की आशा निराशा में बदल गई। वह और उसका परिवार घर वापस आ गया। उनके पेट भूख के कारण जल से रहे थे। रास्ते में उनके पीछे एक अभागा चलता आया।

"हमारे पीछे कौन चला आ रहा है? जब सारी दुनियों ने हमें छोड़ दिया है तो कौन यह हमारे पीछे चला आ रहा है?" पत्नी ने पूछा।

"वह शायद हमारा दुर्भाग्य होगा।" पति ने कहा।

यह सच था। वह मनुष्य उनका दुर्भाग्य ही था। तब तक उन्होंने तो उसे न देखा था। पर वह उनके साथ बहुत दिनों से रहता आया था।

अगले दिन जब बड़ा भाई घर से बाहर निकला तो दरवाजे पर दुर्भाग्य बैठा था।

"देख! इस संसार में कोई सुख नहीं है। क्यों दुखी होते हो? चलो, शराब पीकर मजा उड़ायें...." दुर्भाग्य ने कहा।

"उस के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।" भाई ने कहा।

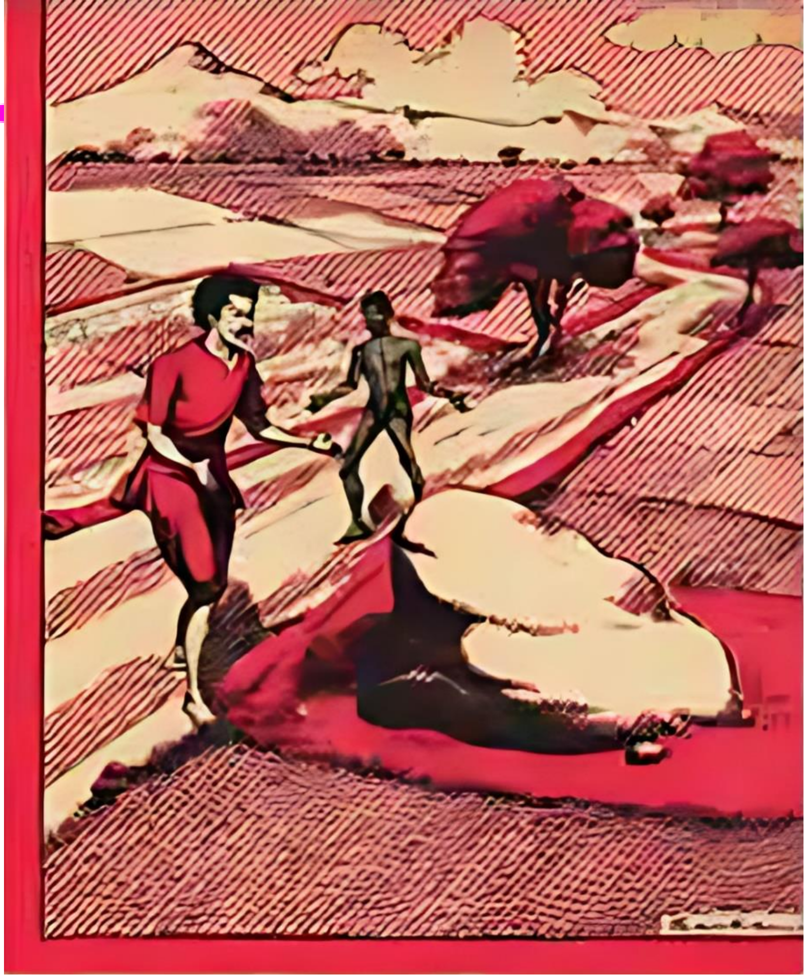
"अब तो सरदी चली गई है। अपना पुराना कम्बल बेच दो। अगर फिर सरदी आई और हम जिन्दा रहे तो देखा जायेगा।" दुर्भाग्य ने कहा।

भाई अन्दर जाकर पुराना कम्बल ले आया। जो उसे बेचकर धन मिला, उससे दोनों ने शराब खरीदकर पी।

उसके बाद बड़ा भाई पर की एक एक चीज को बेचने लगा और जो कुछ मिलता उससे शराब खरीदकर पीता।

दुर्भाग्य दिन रात उसी के साथ रहता। उसे वह और गिरा रहा था। यह भाई जानता था; पर कुछ कर न पाता था।

आखिर बड़े भाई के पास कुछ न बचा। बेचने के लिए मी कुछ न था। कहीँ जाकर मेहनत मशक्कत



करने की सोचता तो दुर्भाग्य जाने नहीं देता।

"जब तक मैं इस दुर्भाग्य से मुकाबला न करूँगा तब तक मेरी हालत न सुधरेगी।" बड़े भाई ने सोचा। एक दिन वे खेतों के बीच में से चले आ रहे थे। उन्हें एक बड़ा पत्थर दिखाई दिया।

"यहाँ कहीं पहाड़ नहीं हैं। इतना बड़ा पत्थर कहाँ से आया? शायद किसी ने इसे यहाँ लाकर रखा होगा। हो सकता है कि इसके नीचे कोई खजाना हो।" बड़े भाई न कहा।

"यह सब तेरा गलत ख्याल है क्यों कर यहाँ कोई खजाना होगा अगर

होता तो क्या वह तुझे या मुझे दिखाई देता? हमारी क्या इतनी भी किस्मत है?" दुर्भाग्य ने कहा।

परन्तु बड़े भाई ने उसकी बात न सुनने का निश्चय कर लिया था। वह तुरन्त गाँव गया। वहाँ एक किसान से गाड़ी बैल लेकर उस जगह पहुँचा, जहाँ पत्थर था। रास्ते भर दुर्भाग्य उसको निरुत्साहित करता रहा। पर बड़े भाई ने उसकी एक न सुनी।

पत्थर के पास गाड़ी से उतर कर, बड़े भाई ने दुर्भाग्य से कहा-"जरा एक हाथ तो लगा, इस पत्थर को एक तरफ हटा दें।"

दोनों मिलकर पत्थर को एक तरफ हटाने लगे। बड़े भाई ने जैसे सोचा था, उस पत्थर के नीचे एक छोटा गढ़ा था। उसमें सोने की मुहरें भरी थीं। दोनों ने उस सोने को गाड़ी में डाला।

"कहीँ और थोड़ा रह न गया हो।" बड़े भाई ने पूछा।

"देखने की कोई जरूरत नहीं। अब कुछ नहीं है।" दुर्भाग्य ने कहा।

"गढ़े में कूदकर होशियारी से देखो। दो-तीन मुहरें रह गयी हो! क्यों रहने दी जायें?" भाई ने कहा।

दुर्भाग्य जब कोसता कुढ़ता गढ़े में गया और झुक कर खोजने लगा तो भाई पत्थर को यथास्थान रखकर गाड़ी पर चढ़कर घर चला आया। दुर्भाग्य से उसका इस तरह पिण्ड छुटा।

उसके बाद, उस पर कोई कष्ट न आये। वह पत्नी, बाल-बच्चों के साथ आराम से रहने लगा।





[११]

[ट्रोय युद्ध के बाद रूपपर स्वदेश के लिए निकला। मार्ग में बहुत वर्षों तक तरह तरह की मुसीबतें झेलता रहा। वह अपने सैनिकों को भी खो बैठा। आखिर जैसे तेसे यह स्वदेश पहुँचा। पर अभी उसके कष्ट समाप्त न हुए थे। उसकी आराध्य देवी बुद्धिमति ने उसका रूप रङ्ग बदलकर उसको बूढ़ा बना दिया। इस बीच इथाका में--]

ट्रोय नगर से ग्रीकों के लौटने के बाद यह अफवाह फैल गई थी कि रूपधर रास्ते में मर गया था। इथाका और उसके समीपवर्ती दीपों के एक सौ बारह राजकुमार रूपधर के घर आ गये। रूपधर की पत्नी पद्ममुखी से विवाह करके उनमें से हरेक इथाका का राजा बनने की कोशिश में था।

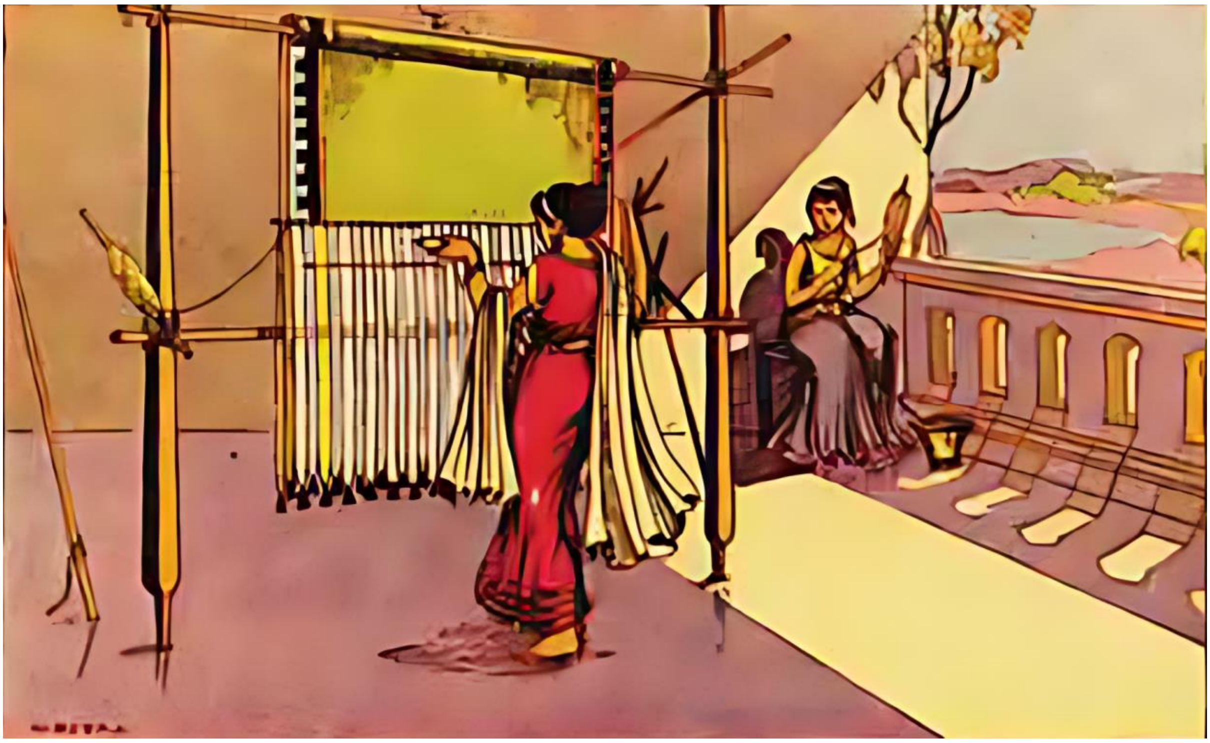
धीरमति अभी छोटा था। जब वह गोदी का बच्चा था तभी रूपधर युद्ध में चला गया था। इसलिए धीरमति अपने पिता को बिल्कुल न पहचानता था। परन्तु वह अपने पिता के आगमन की उत्कण्ठापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था।

जब उसके बारे में कोई समाचार न मिला तो वह चिन्तित रहने लगा। "अच्छा होता यदि यह निश्चित रूप से जाना जा सकता कि वे मर गये थे। मेरी माँ किसी से शादी कर सकती थी।" वह सोचा करता।

राजकुमारों ने धीरमति को निकम्मा बना रखा था। उसके घर में धरना दे उसका खाना खाकर शराब पी पाकर मजा उड़ा रहे था। हर कोई यह शेखी मारता कि पद्ममुखी उसकी पत्नी थी।

पद्ममुखी को पूरा विश्वास था कि उसका पति बापस आयेगा। ज्योतिषी से उसने मालूम कर लिया था कि रूपधर मरा न था। इसलिए उसने फिर शादी करने से इनकार कर दिया था। परन्तु उससे शादी करने के लिए आये हुए राजकुमार कहा करते कि रूपधर मर गया है और उसे शादी करने के लिए सताते। उनसे छुटकारा पाने के लिए उसने एक चाल चली। "मैं अपने ससुर की लाश को ढकने के लिए कपड़ा बुन रही हूँ, उसके पूरा होते ही स्वयम्बर रखूँगी।" राजकुमार इसके लिए मान गये।

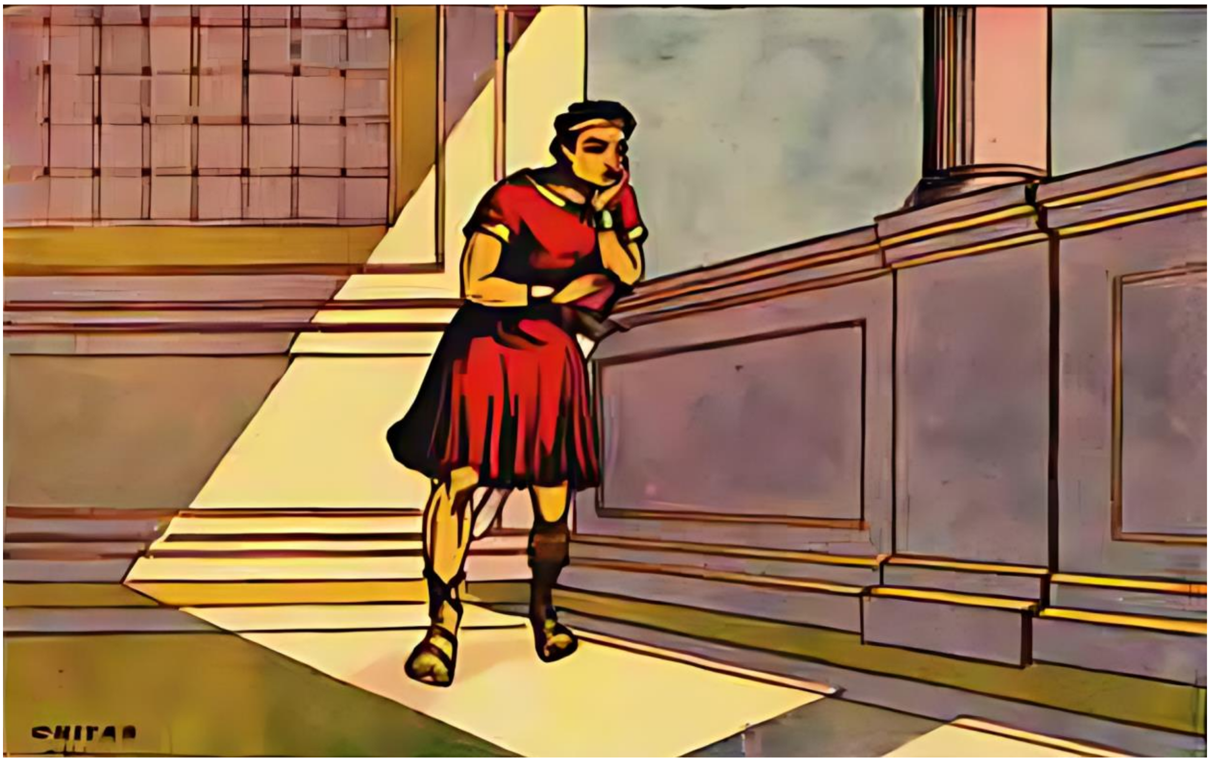
तब से रोज पद्ममुखी दिन में कपड़ा बुनती और रात को बुने हुए कपड़े को उधेड़ देती। इस प्रकार उसने तीन साल बिताये। फिर राजकुमारों ने उसे पकड़ लिया। उनकी पूर्तता की हद न रही।



यह देख धीरमति ने एक निर्णय किया। उसने पैलास जाकर नवद्योत से और स्पार्टा जाकर प्रताप से मिलकर अपने पिता के बारे में जानने की ठानी। सबसे अन्त में प्रताप घर लौटा था। इसलिए वह जरूर कुछ न कुछ जानता होगा।

"अगर यह पता लग गया कि पिता मर गये हैं तो उनका श्राद्ध वगैरह करूँगा और माता के लिए स्वयम्बर का प्रबन्ध करूँगा। इन दुष्टों को मैं तनिक भी न सहूँगा। मेरी उम्र के लड़के कितनी ही बहादुरी से काम कर रहे हैं। अगर मेरे पिता जीवित रहे तो मैं इनसे किसी न किसी तरह बदला लूँगा।" धीरमति ने सोचा।

यह निश्चय करके उस दिन धीरमति ने राजकुमारों से कहा-"महाशयो! आप सब मेरी माँ से शादी करना चाहते हैं। मगर मुझे आपका व्यवहार बिल्कुल पसन्द नहीं है। कल मैं चौक में सबके सामने आपको मेरा घर छोड़कर चले जाने के लिए कहने जा रहा हूँ। आप अपने घर में पीजिये और मौज उड़ाइये। अगर आपका यही रवैया रहा तो आपका नाश भी हो सकता है।"





उस लड़के का यह साहस देखकर उन दुष्टों को आश्चर्य हुआ।

अगले दिन धीरमति ने ढिँढोरा पिटवा दिया कि सब शहर के चौक में एकत्रित हो। वह हाथ में माला और दो कुत्तों को लेकर शान से चौक में पहुँचा। यहाँ एकत्रित पञ्चायतदारों ने उसको पिता के उच्च आसन पर बैठने दिया।

जब सब यथास्थान पर बैठ गये तो वृद्ध अईगुप्त ने उठकर पहले पहल कुछ कहा। उसका एक लड़का, रूपधर का सैनिक था और वह भाललोचन द्वारा खा लिया गया था।

उसका एक और लड़का उन राजकुमारों में था जो पद्ममुखी से शादी करना चाहते थे। उसने कहा- "जिस किसी ने भी इस सभा का प्रबन्ध किया है उसने अच्छा ही किया है क्योंकि जबसे रूपधर युद्ध में गया है, तबसे इथाका में कोई सभा ही नहीं हुई है। आज हम किसलिए यहाँ एकत्रित हुए है, यह मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ।"

वृद्ध की ये बातें सुनकर धीरमति का उत्साह बढ़ा। उसने खड़े होकर कहा-"महाशयो! इस सभा का आयोजन मैंने किया है। मैंने अपने कष्टों को सुनाने के लिए ही आपको निमन्त्रित किया है। पिता की मृत्यु से भी बड़ी आफत मुझ पर आ पड़ी है। वह यह कि मेरी माँ से शादी करने के लिए कई राजकुमार घर आये हुए हैं। उनके व्यवहार से मेरी नाक में दम आया हुआ है। मुझे भय है कि शीघ्र ही मेरा सत्यानाश हो जायेगा। उन लोगों में कई यहाँ उपस्थित सज्जनों के पुत्र भी हैं। उनमें इतना साहस नहीं कि हमारे नाना के पास



जाकर मेरी माँ का हाथ माँगे। इसलिए हमारे घर में वे धरना दिये हुए हैं। हमारे पशु काटकर खा रहे हैं। हमारी शराब पी रहे हैं और जो चाहे सो कर रहे हैं। क्योंकि मेरे पिताजी घर में नहीं है; इसलिए हमारा घर घर नहीं है, मछली का बाजार-सा है। मेरे पिता ने इस देश का क्या अपकार किया था कि मुझे आज यह भुगतना पड़ रहा है? यह आप सब के लिए भी सोचने का विषय है।"

तुरन्त दुर्बुद्धि नाम के एक व्यक्ति ने उठकर कहा-"धीरमति, जो तुमने आपत्ति प्रकट की है, उसका कोई अर्थ ही नहीं है। जब गलती सारी तुम्हारी माँ की है तो हमें क्यों कोसते हो? तीन साल तक तुम्हारी माँ हम सब को धोखा देती रही। उसने हममें से हरेक को ललचाया; कहा कि कपड़े के बुनने के समाप्त होते ही स्वयम्बर करेगी। तीन साल बीत गये। अब चौथा साल चल रहा है और वह कपड़ा खतम नहीं होता। अगर रात को जो कुछ दिन में बुना है, उधेड़ दिया जाय तो वह कैसे खतम होगा? उससे शादी करने की इच्छा रखनेवालों की तरफ से मैं यह कह रहा हूँ। उसे तुम अपने घर से हटा दो और कहो कि जिससे वह चाहे, शादी कर ले। अगर वह इस तरह हमें धोखा देती रही, तो हम तुम्हारा घर न छोड़ेंगे।"

"मैं अपनी माँ को अपने घर से नहीं भेज सकता और मैं ऐसी स्थिति में भी नहीं हूँ कि जो कुछ वह मायके से लाई थी, उसे वापिस कर दूँ।" धीरमति ने कहा।

एक और बूढ़े ने खड़े होकर कहा-"रूपधर जब युद्ध के लिए जा रहा था,

तभी मैंने बताया था कि वह जाने के बीस वर्ष पश्चात् बहुत मुसीबतों के सहने के बाद घर लौटेगा। अब तक जो कुछ मैंने कहा था यह ठीक निकला है जो उसके घर धरना दिये हुये हैं, उनके बुरे दिन नजदीक हैं।"

"तू अपना यह ज्योतिष, अपने लड़के को बता। हम तेरी इस धमकियों से डरनेवाले नहीं हैं। रूपधर यदि वापस आ भी गया तो वह हमें अपने घर से हटाने का साहस नहीं कर सकता।" एक और ने शेखी बघारी।

आखिर धीरमति ने कहा-"जो कुछ मुझे कहना था मैने कह दिया है। अगर आपने मेहरबानी करके मुझे एक नौका और बीस नाविक दिये तो मैं स्पार्टा और पैलास जाकर अपने पिता के बारे में कुछ जान सकूँगा। अगर यह पता लगा कि वे जीवित हैं तो एक साल तक इनकी धौस सहता रहूँगा। और अगर यह पता लगा कि मेरे पिता मर गये हैं तो मैं उनका श्राद्ध करूँगा और माँ के विवाह का मैं स्वयं प्रबन्ध करूँगा।"



सभा के समाप्त होने के बाद धीरमति घर न जाकर समुद्र तट पर गया। वहाँ उसे सहन नाम का एक व्यक्ति दिखाई दिया। यह सहन रूपधर का अच्छा मित्र था। उसने भीरमति को देखकर कहा-"आज तुम्हें देखकर बड़ी खुशी हुई। अब पता लगा जैसा पिता बैसा पुत्र। इथाका में बहुत सी नौकायें हैं। उनमें से सबसे अच्छी तुम्हारी यात्रा के लिए चुनूँगा। यात्रा के लिए आवश्यक नाविक भी मैं ही खोजकर जुटाऊँगा। तुम घर जाकर यात्रा की तैयारी करो।"

धीरमति तुरन्त घर चला गया। उसको देखते ही उसके घर में धरना दिये हुए लोग उसका परिहास करने लगे।

"अरे बाप रे बाप, यह हमारा खून चूसने की सोच रहा है। जाने क्या हम इसको समझे हुए थे।" एक ने कहा।

"जानते हो यह स्पार्टा और पैलास क्यों जा रहा है? सेना इकट्ठा करके लाने के लिए।" एक और ने कहा।

"कहीं थोड़ा विष लाकर हमारी शराब में न मिलाये।" तीसरे ने कहा।



"यह भी सोचो कि वह अपने पिता की तरह समुद्र में एक बार गया कि नहीं जाता ही रहेगा। इसकी सम्पत्ति आपस में बाँटने के लिए हम मरेंगे।" चौथे ने कहा।

धीरमति ने उनकी बातें न सुनी। उसने अपनी दायी को अपनी यात्रा के बारे में बताया। फिर दुकान में जाकर उसने वे सब चीजें तैयार रखने के लिए कहा, जिनकी यात्रा के लिए जरूरत थी।

"बेटा, तुम न जाओ.... अगर तुम भी यात्रा पर कहीं चले गये तो तुम्हारी माँ की गति क्या होगी?" वह बूढ़ी दायी रोने लागी।

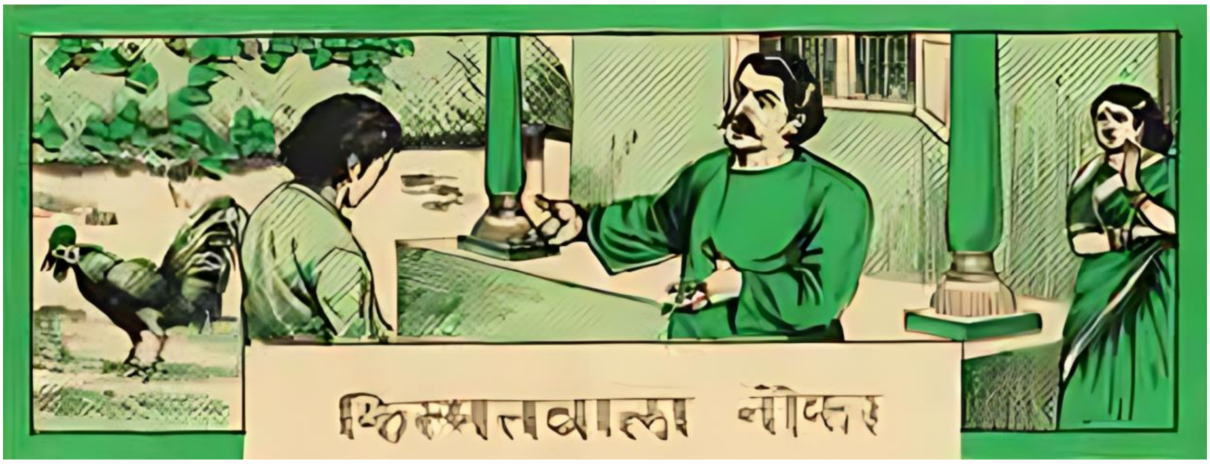
"यह विधि का निश्चिय है। तुम मुझे न रोको। आज रात को, जब मेरी माँ सो रही होगी तब में चला जाऊँगा। तुम प्रतिज्ञा करो कि जबतक वह मेरी यात्रा के बारे में न पूछे तबतक तुम नहीं बताओगी। यात्रा के लिए आवश्यक खाने पीने की चीजें तैयार रखो।"

इस बीच, सहन इधर उधर घूम फिरकर यात्रा के लिए जरूरी नाविकों को बुलाकर समुद्र तटपर ले आया। अच्छी नौका भी मिल गई। इतने में अन्धेरा हो गया। रूपधर के घर में सब खा पीकर सो रहे थे। उस समय सहन ने आकर धीरमति से कहा-"बेटा! यात्रा के लिए सब तैयार है, बस, तुम्हारे आने की ही देरी है।"

दोनों मिलकर समुद्र तट पर पहुँचे। नाविकों ने यात्रा के माल असबाब को रूपधर के घर से लाकर नौका में रखा। धीरमति नौका में चढ़ा। नाविकों ने लङ्गर उठाया और पाल चढ़ा दिये। अनुकूल हवा चल रही थी। नौका पैलास की और चल दी।

(अभी और है)





एक किसान था। वह खेतों में मजदूरी करके जिन्दगी बसर किया करता था। उसके तीन लड़के थे। बड़ा लड़का, साहुकार के घर काम के लिए लगा।

"अबे, मुर्गे ने बाङ्ग दी कि नहीं कि तुझे काम पर लग जाना होगा। नहीं तो तुझे काम पर न रखूँगा।" साहुकार ने अपने नौकर से पहले ही कह दिया। नौकर भी मुर्गे के बोलते ही काम पर जाने लगा। तीन दिन बीत गये। चौथे दिन वह मुर्गे की बाङ्ग के साथ नहीं उठा। उसी दिन साहुकार ने नौकर को काम से हटा दिया। और उसे एक पाई भी न दी।

फिर दूसरा लड़का काम पर गया। सप्ताह भर उसने काम किया। उसके बाद उसकी भी उसके भाई की गति हुई।

आखिर तीसरा लड़का काम पर आया। वह जानता था कि कैसे उसके भाई साहुकार द्वारा हटाये गये थे। उसने साहुकार को सबक सिखाना चाहा।

साहुकार ने अपनी आदत के अनुसार अपने नये नौकर से कहा- "तुम्हें रोज मुर्गे के बाङ्ग लगाते ही काम पर आना होगा। अगर ऐसा न किया तो तुम्हें एक क्षण भी न रखूँगा। सवेरे से शाम तक काम करना होगा।"

"यह सब मञ्जूर है।" नये नौकर ने कहा।

"तो तुम तनख्वाह कितनी चाहते हो?"

"मुझे अधिक नहीं चाहिये। एक साल काम करने के बाद आपको एक मुक्का लगाऊँगा और मालकिन को एक बार चूँटी काटूँगा।" नौकर ने कहा।

"यह तो पागल मालूम होता है।" साहुकार ने कहा। नौकर को देखकर यह मन ही मन हँसा। फिर वह उसकी बात मान गया।

उस दिन काम खतम करके सोने के लिए जाते समय नौकर ने मुर्गा पकड़ा, उसका गला बाँध दिया और जाकर सो गया। सूरज निकल आया; पर वह मुर्गा न बोला। नौकर ने जाकर मालिक से कहा सूरज निकल और यह आया मुर्गा क्यों नहीं बोलता है? मुझे थोड़ा खाने को दीजिये, मुझे काम पर जाना है।"

साहुकार यह न जान सका कि मुर्गा क्यों नहीं बोला था।

"चल, हम शहर चलें," वह एक और मुर्गा खरीदना चाहता था। वे शहर जा रहे थे कि रास्ते में उन्हें एक मारनेवाला बैल दिखाई दिया। पाँच आदमी रस्सी बाँधकर उसे खींच रहे थे और वह काबू में नहीं आ रहा था।

"कहाँ जा रहे हो भाइयो?" नौकर ने उनसे पूछा।

"बड़ा अड़ियल है यह बैल। इसे बेचने ले जा रहे हैं। अगर किसी ने



इसे न खरीदा तो कसाई को दे देंगे।" उन्होंने कहा।

"अच्छे बैल के लिए एक चोट काफी है। कहकर नौकर ने बैल के माथे पर एक मुक्का मारा। तुरन्त उतना बड़ा बैल मरकर गिर गया।

उसको ले जानेवालों ने कहा-"पिण्ड छुटा पर इसका चमड़ा मिल जाये तो काफ़ी है। "

"इसमें क्या रखा है?" कहते हुए नौकर ने बैल के चमड़े को दोनों अंगुलियाँ के बीच में रखकर खींचा। तुरन्त चमड़ा

केले के छिलके की तरह निकल आया। तब साहुकार जान गया कि उसके नौकर का मुक्का और चूँटी कितनी जबर्दस्त थी। वह पसीना पसीना हो गया।

"शहर किसी और दिन चलेंगे। आज घर ही चलें।" साहुकार ने कहा। उसने एक और मुर्गा खरीदने का इरादा छोड़ दिया और घर वापस चला गया।

उसने अपनी पत्नी से कहा-"यह हमारा नौकर नहीं यम-सा है। जब मैंने इसको काम पर लिया और इससे तनख्वाह पूछी तो इसने कहा कि मुझे एक मुक्का मारेगा और तुझे एक बार चूँटी काटेगा। मुझे क्या मालूम था? मैंने सोचा कि इसमें हमारा ही फायदा था। मालूम है, आज क्या हुआ?" फिर उसने बताया कि कैसे एक मुक्के से उसने एक बैल को मार दिया था और कैसे एक चूँटी से उसका चमड़ा अलग कर दिया था।

"बाप रे बाप, इस तरह के आदमी को एक मिनट भी न रखो। जैसे में कहूँ वैसे करोगे तो इससे छुटकारा मिल जायेगा। आज शाम को जब वह गाय भैसों को लाये तो कहना कि एक गाय



बापस नहीं आई है, उसे अन्धेरे में ही जङ्गल भेजना। वहाँ उसे कोई जङ्गली हिंस्र जन्तु हजम कर लेगा।" साहुकार की पत्नी ने कहा। दुष्टता में वह अपनी पति से किसी कदर कम न थी।

साहुकार को यह सलाह जँची। सूर्यास्त के समय, जब नौकर गौवों को घर हाँक कर लाया तो उसने नौकर से वहा-"क्या सब गायें घर आ गई हैं? एक गौ कम दिखाई देती है। गौव्वे सब है कि नहीं गिनना चाहिये था कि नहीं?"

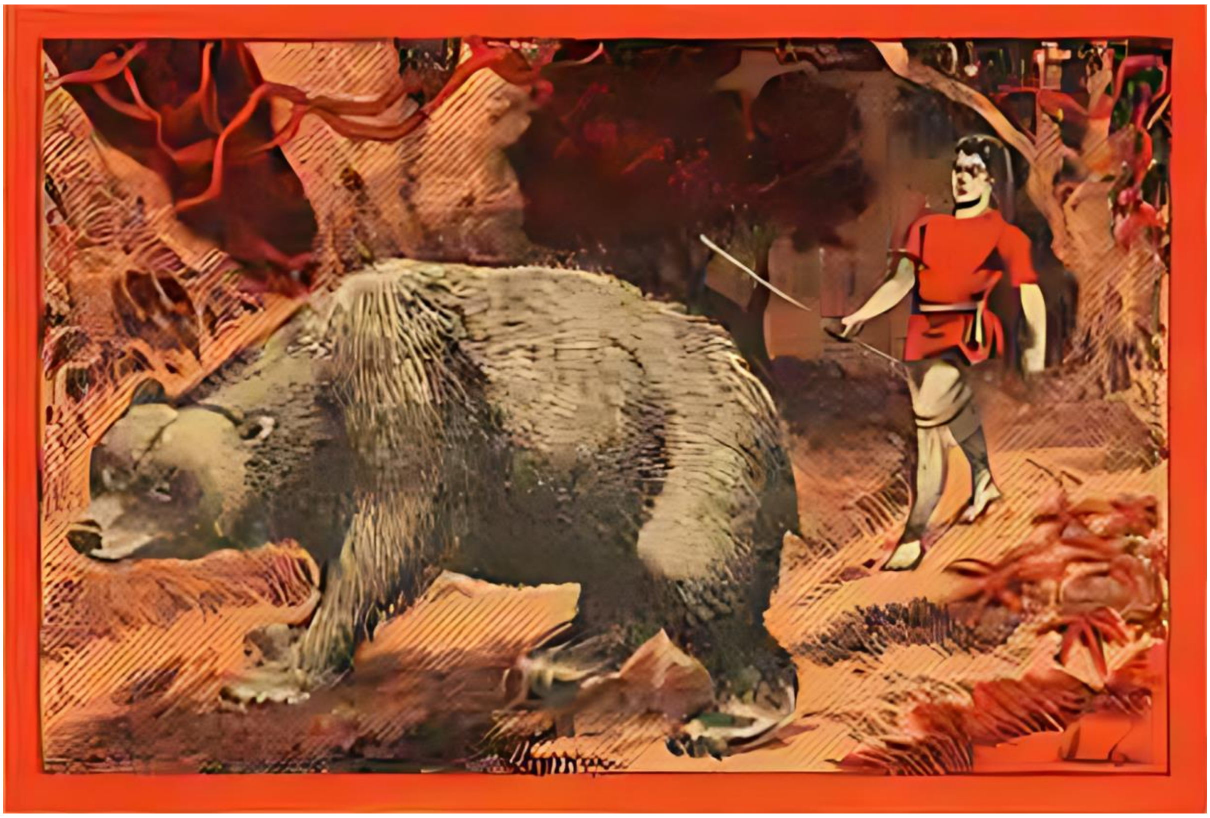
"गिना था। सब ठीक थीं।" नौकर ने कहा।

"ठीक क्या है? एक गौ जङ्गल में ही रह गई है। तुरन्त जाकर खोज कर लाओ।" साहुकार ने कहा।

यह सोचकर कि उसने ही गलती की है, नौकर अन्धेरे में ही जङ्गल गया।

घूमते-घूमते उसे एक गुफा के सामने कोई काली चीज दिखाई दी।

"तू यहाँ मर रही है। चल घर।" वह उस चीज का गला पकड़कर जल्दी जल्दी घर ले गया और पशुओं के छप्पर





में उसे डालकर उसने ताला बन्द कर दिया। वह जङ्गल से एक भालू पकड़ लाया था। मगर उसे यह पता न था।

जब अगले दिन सवेरे साहुकार ने ने ताला खोलकर अन्दर देखा तो गौवें सब मर गई थी। एक बड़ा भालू एक कोने में पड़ा आराम से खर्राटे मार रहा था।

साहुकार छाती पीटता नौकर के पास गया। "देखा तुमने? कोई भालू हमारे पशुओं के घर में घुसकर सब गौवें खा गया।" नौकर ने आकर देखा। "सच है। शायद रात में मैं इसी भालू को पकड़ लाया था। अन्धेरे में, मुझे कुछ ठीक पता नहीं लगा।"

साहुकार को तो लकवा-सा मार गया। उसने जाकर पत्नी से जो कुछ गुजरा था कहा। उसने कहा-"इसे भूत खाये, यह कहाँ से हमारे सिर पर आ मरा है।"

"भूत कहने से याद आया, अगर इससे छुटकारा पाना है तो इसे भूतों को सौंपना होगा।" कहकर साहुकार नौकर के पास आया।

"क्यों बे, जानते हो हमारे खेत के उत्तर में भूतों का एक पोखर है। वहाँ रहनेवाले भूतों को हमें बहुत-सा किराया देना है।जाकर वसूल करके आओ।"

"उन्हें कितना देना है?" नौकर पूछा।

"जितना दें, लेते आना, उनसे भला क्या भाव ताव?" साहुकार ने कहा।

नौकर यह मान गया। सन का गठ्ठर लेकर भूतों के पोखर पर गया और वहाँ रस्सी बटने लगा।

थोड़ी देर बाद, पोखर के पानी से सिर उठाकर एक पिशाच ने नौकर से पूछा-"क्यों भाई! क्या कर रहे हो?"

"देखते नहीं हो, रस्सी बट रहा हूँ।" नौकर ने कहा।

"किसलिए?" भूत ने पूछा।

"किसलिए" तुम सब भूतों को पकड़कर ले जाने के लिए।" नौकर ने कहा।

"हमने कौन-सी गलती की है?" भूत ने पूछा।

"गलती! सुना है तुम मालिक को ठीक किराया नहीं दे रहे हो।" नौकर ने पूछा।

"थोड़ा ठहर, मैं सरदार से पूछकर आता हूँ।" कहकर वह पानी में डूब गया।

नौकर ने रस्सी बटकर, उसके दोनों सिरे मिलाकर उसे किनारे पर रख दिया। फिर उसने एक गहरा गढ़ा खोदा। उसपर टहनियाँ आदि डाली। उनपर उसने अपने सिर की टोपी रखी। उसमें एक छेद किया।

इतना सब करने के बाद भूत बाहर आया। उसने कहा-"हम तो कहीं पाताल में रहते हैं, तुम कैसे हमें रस्सी से पकड़ सकोगे? यह हमारा सरदार पूछ रहा है।"

"क्या तुम उसे मामूली रस्सी समझ रहे हो? वह एक ऐसी रस्सी है, जिसका सिरा ही नहीं है।" कहकर नौकर रस्सी



को हाथ में घुमाने लगा। वह घुमाता जाता था और रस्सी खतम न होती थी। यह देख भूत हैरान रह गया। "खैर, हमें आखिर तुम्हें देना कितना है?"

नौकर ने कहा-"तुम इस टोपी को चान्दी के रुपयों से भर दो, यह काफी है, तुम्हारा ऋण खतम हो जायेगा।"

भूत चला गया और चान्दी के रुपयों को लाकर टोपी में भरने लगा। क्योंकि टोपी में छिद्र था, छिद्र में से रुपये नीचे गढ़े में चले जाते थे। इसलिए बहुत से रुपये डालने पर भी टोपी न भरी।

"इस छोटी टोपी में कितनी चान्दी भरी है।" सोचता हुआ भूत चला गया। भूत के चले जाने के बाद नौकर उस चान्दी को गाड़ी में होकर साहुकार के यहाँ आया।

उसको और उसके लाये हुए चान्दी को देखकर साहुकार का खुश होना तो अलग, उसका माथा ठनका। उसने पत्नी से जाकर कहा-"सत्यानाश हो गया। इसका तो भूत भी कुछ न बिगाड़ सके। हम जरूर इसके हाथ मारे जायेंगे।" वह रोने लगा।

"जोर से मत रोओ। क्योंकि हम इसे भगा नहीं पायेंगे, इसलिए हम ही आधी रात के समय भाग जायेंगे। सम्पत्ति जाती है तो जाने दो, जान बचे लाखों पाये।" साहुकार की पत्नी ने कहा।

उस दिन रात को पति पत्नी पर छोड़कर भाग गये। उनकी सम्पत्ति नौकर की हो गई। वह अपने पिता और भाइयों को अपने घर ले आया। भूतों के दिये हुए रुपयों से आराम से रहने लगा।





कैरो नगर में गुहा नाम का एक प्रसिद्ध हसोड़ रहा करता था। उसे एक दिन बागवानी करने की इच्छा हुई। इसलिए उसने अपना सारा आङ्गन खोद डाला और तरह तरह के पौधे लगाये। बड़े ध्यान से उनकी देख-भाल करने लगा।

यह जानकर कि गुहा को बागवानी में दिलचस्पी हुई है, उसके कई मित्रों ने उसको सलाह दी, उसकी भरसक मदद की। थोड़े दिनों में गुहा के बाग में अच्छे अच्छे फूल खिलने लगे।

एक दिन एक रईस गुहा को देखने आया। वह तब बाग में था।

"सुना है कि तुम बड़े बागवान बन गये हो। परन्तु तुम्हारे बाग में कोई नये तरह के पौधे क्यों नहीं दिखाई देते?" रईस ने पूछा।

"जो जो बीज मिलते हैं, उनको उगा कर देख रहा हूँ। अगर नये पौधे नहीं होते तो उसमें मेरा कसूर नहीं हैं।" गुहा ने कहा।

"नये बीज तो मैं दे दूँगा। पर मुझे सन्देह है कि तुम उन्हें उगा नहीं पाओगे।" रईस ने कहा।

"आप सन्देह न कीजिये। मैं हर बीज उगा लेता हूँ।" गुहा ने कहा।

"तो मैं कल सवेरे नौकर के हाथ बीज भेज दूँगा। उन्हें हमारे दामाद ने हाल में ही बागदाद से भेजा था। क्योंकि मुझे बागवानी में दिलचस्पी न थी इसलिए मैंने उन्हें पुड़िया में बाँधकर रख दिया है।" रईस ने कहा।

अगले दिन सवेरे रईस के नौकर ने पुड़िया देकर कहा-"इसे मालिक ने

आपको देने के लिए दिया है। इन्हें बड़ी सावधानी से उगाने के लिये कहा है।"

गुहा ने पुड़िया खोल कर नौकर से पूछा-"क्या तुम्हारे मालिक ने यह न बताया था कि ये किस चीज़ के बीज हैं?"

"उन्हें ही नहीं मालूम है। उन्होंने कहा है कि जब पौधे बड़े हो जायेंगे तो वे उन्हें देखने आयेंगे।" यह कहकर नौकर चला गया। बागवानी करनेवाले को जब किसी बीज के बारे में मालूम नहीं होता तो वे साधारणतया उसे मुख में डालकर उसका स्वाद देखते हैं। गुहा ने भी वही किया और रईस का धोखा ताड़ गया।

वे बीज नहीं थे, मुखाये हुए मछली के अण्डे थे। उसका मजाक करने के लिए ही उस रईस ने वे दिये थे। गुहा ने उससे बदला लेने की ठानी।

दो सप्ताह गुजर गये। गुहा जब बाजार गया हुआ था तो रईस ने जो सामने से आ रहा था, पूछा-"क्यों गुहा, गुलाब ठीक हैं न?"

"आपकी मेहरबानी ने इस बार तो गुलाब ऐसे खिले हैं कि पत्ते भी नहीं दिखाई देते।" गुहा ने कहा।



"अरे हाँ, जो बीज मैने भेजे थे, के बोये कि नहीं?" रईस ने पूछा।

"तभी वो दिये थे।" गुहा ने कहा।

रईस ने हँसी रोकते हुए कहा-"शायद उगे नहीं होंगे। हमारे दामाद ने बताया था कि उन्हें उगाना मामूली बागवान के बस की बात नहीं है।"

"हटाइये, मैंने उनके लिये क्यारियों बनाई, जरूरी खाद दिया। आपके भेजे हुए बीज अभी अभी उग रहे हैं। उनपर नजर या धूप नहीं लगनी चाहिये। इसलिए उन्हें ढक रखा है,

कल हमारे घर तशरीफ लाइये, तब उन्हें दिखाऊँगा।"

रईस ने कहा-"अच्छा, तो कल जरूर आऊँगा।" वह अपने रास्ते चला गया।

गुहा मछली की दुकान में जाकर कुछ छोटी मछलियों लेकर घर गया। उसने अपने छोटे लड़के को बुलाकर कहा-"बेटा, इनको ले जाकर बाग में इस तरह गाड़ो कि इनका मुख दिखाई देता रहे और उनको कसोरों से ढक दो।"

गुहा के लड़के ने वैसा ही किया।

अगले दिन सवेरे रईस आया। गुहा उसको साथ ले गया और कसोरों को दिखाकर उसने कहा-"पौधे उनके नीचे हैं।" उसने एक कसोरा उठाकर दिखाया। रईस को एक मछली दिखाई दी, मानों वह जमीन तोड़कर उग रही हो।

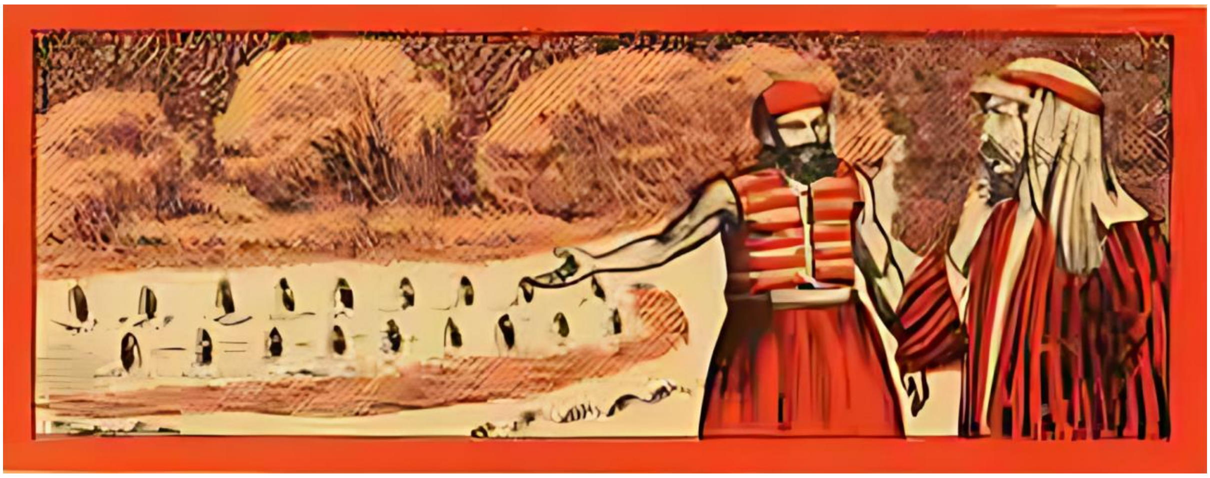
गुहा ने जब सब कसोरे उठाकर दिखाये तो रईस का सिर चकरा गया।

"आश्चर्य! कल मैंने तेरी बात पर विश्वास न किया था। आज स्वयं देखा है; इसलिए विश्वास कर रहा हूँ।"

"इन बीजों का उगाना कोई मुश्किल नहीं है। अगर मेरे पास दस एकड़ हो तो फसल तैयार कर दूँ।"

"यह काम में ही करूँगा।" रईस ने कहा। घर जाकर उसने अपने किसान से कहा-"अरे, इस साल खेतों में सूखे मछली के अण्डे बोओ।" किसानों ने वैसा ही किया।

गुहा ने यह खबर सारे शहर में फैला दी। सब रईस को देखकर हँसने लगे। रईस पछताने लगा कि गुहा का परिहास करने का कारण उसको ठीक फल मिला था।



CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 1958 Regd. No. M. 5432



रूपधर की यात्राएँ